Useful For Prelims

Date: 11 January 2026

स्त्री शिक्षा की राह में चमकता तारा

जनसत्ता सरोकार

शुक्र ग्रह पर एक 'क्रेटर' का नाम जोशी है। धरती पर मुख्यधारा की आबादी में जिस काम में सिद्धहस्त होना पुरुषों के लिए सहज गौरव की बात होती है, वहां महिलाओं के लिए पूरा असहजता का आसमान होता है। आज किसी महिला डाक्टर का नाम सुनते ही दिल में सम्मान का भाव आता है। पर महिलाओं के लिए यह भाव हासिल करना उतना आसान नहीं था। इस राह पर चलने के लिए आनंदी गोपाल जोशी ने इतनी मुश्किलें उठाईं कि उनके सम्मान में शुक्र ग्रह के 'क्रेटर' का नाम रखा गया। आनंदी गोपाल का जन्म 31 मार्च 1865 को महाराष्ट्र के कल्याण में हुआ था। उनका बचपन का नाम यमुना बाई था। महज नौ साल की उम्र में यमुना का विवाह गोपाल राव जोशी से हुआ। गोपाल राव जोशी ने अपनी ब्याहता को आनंदी बाई का नाम दिया। गोपाल राव प्रगतिशील मानसिकता के इंसान थे व स्त्री शिक्षा के महत्त्व को समझते थे। उन्होंने अपनी बालिका वधू को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। चौदह साल की उम्र में आनंदी ने एक बच्चे को जन्म दिया, जिसकी मृत्यु हो गई। अपने नवजात की मृत्यु का आघात मिलने के बाद आनंदी ने डाक्टर बनने का संकल्प लिया। गोपाल राव जोशी तत्कालीन समय में हर तरह की संकीर्णताओं से मुक्त थे। उन्हें अहसास था कि डाक्टरी की पढ़ाई विदेश में करनी जरूरी है। पति के सहयोग और अपनी मेहनत से आनंदी गोपाल ने 1886 में अमेरिका के पेंसिल्वेनिया में मेडिकल कालेज से एमडी की उपाधि हासिल की। वे भारत लौटीं और यहां कोल्हापुर के अल्बर्ट एडवर्ड अस्पताल में महिला वार्ड की प्रभारी बनीं। कुदरत की विडंबना रही कि जिस स्त्री ने स्त्रियों का जीवन लंबा और सेहतमंद करने के लिए इतना संघर्ष किया, उसकी फरवरी 1887 में महज 22 साल में तपेदिक से मृत्यु हो गई।

आनंदी गोपाल जोशी

तानों से तपकर 'आखिरी' बनीं चैंपियन

आखिरी शर्मा • स्वयं

हरियाणा के हिसार जिले के सिसाय गांव की बेटी ने 'आखिरी' नाम के सहारे ही जीत की नई इबारत लिख दी है। जिस नाम को लेकर बचपन में ताने मिले, वही नाम आज देशभर में गर्व के साथ लिया जा रहा है। खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में कोटा में स्वर्ण पदक जीतकर आखिरी ने खुद को राष्ट्रीय स्तर की फेंसिंग (तलवारबाजी) चैंपियन के रूप में स्थापित किया है।

नई इबारत

अंकित शर्मा • जागरण

जालंधर : हरियाणा के हिसार जिले के हांसी के पास स्थित सिसाय गांव की बेटी आखिरी शर्मा ने यह साबित कर दिया है कि हालात नहीं, हौसले किस्मत बनाते हैं। जिस नाम को लेकर बचपन में ताने मिले, उसी नाम के बदौलत उन्होंने न सिर्फ अपनी पहचान बनाई, बल्कि नई पीढ़ी के लिए अब यही नाम एक प्रेरणा और एक सम्मान है। हाल ही में उन्होंने खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में कोटा में गोल्ड मेडल जीतकर आखिरी ने खुद को राष्ट्रीय स्तर की फेंसिंग (तलवारबाजी) चैंपियन के रूप में स्थापित किया है।

आखिरी शर्मा इस समय जालंधर के हंसराज महिला महाविद्यालय में ग्रेजुएशन (शारीरिक शिक्षा) के अंतिम वर्ष की छात्रा हैं और कॉलेज व गुरु नानक देव विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। बचपन से ही 'आखिरी' नाम को लेकर मजाक और तानों का सामना करना पड़ा। कई बार मन टूटा, लेकिन उन्होंने तय किया कि नाम को कमजोरी नहीं, ताकत बनाएंगी। हरियाणा में जहां अधिकतर युवा कुश्ती और पहलवानी में पहचान बना रहे थे, वहीं आखिरी ने एक अलग खेल चुनने का साहस किया। साल 2020 के दिसंबर में कोच सुमित गुलिया से मिलीं और फेंसिंग की ट्रेनिंग शुरू की। शुरुआती दौर में खेल नया था, लेकिन जल्द ही तलवारबाजी से ऐसा जुड़ाव बना कि वही उनकी पहचान बन गई। कोरोना काल में अभ्यास प्रभावित हुआ, पर हिम्मत नहीं हारी। बाद में कोच संदीप के मार्गदर्शन ने उनके खेल को नई दिशा दी। इस सफर में परिवार का साथ उनकी सबसे बड़ी ताकत रहा। पिता संजय कुमार ट्रांसपोर्टर हैं और मां बोबली देवी गृहिणी। पांच बहनों में आखिरी चौथे नंबर पर हैं। बड़ी बहन ममता शर्मा टैक्स इंस्पेक्टर हैं और खुद भी राज्य स्तर की खिलाड़ी रह चुकी हैं। बहनों की सफलता और संघर्ष ने आखिरी को लगातार आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

उपलब्धियां

- **सीनियर नेशनल गेम्स :** टीम स्पर्धा में स्वर्ण, एकल में कांस्य
- **38वीं नेशनल गेम्स, उत्तराखंड :** एकल में रजत , टीम को स्वर्ण
- सीनियर वर्ल्ड कप 2025 में सहभागिता
- जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप (चीन) में सहभागिता
- एशियन जूनियर चैंपियनशिप में दो बार सहभागिता

अगला लक्ष्य ओलिंपिक में गोल्ड

आखिरी का सपना भारतीय सेना में जाने का है, लेकिन वह यह भी चाहती हैं कि खेल उनसे कभी दूर न हो। उनका लक्ष्य साफ है- 2026 में एशियन चैंपियनशिप और 2028 में ओलिंपिक खेलों में देश के लिए गोल्ड मेडल जीतना। वे मानती हैं कि अगर सही मार्गदर्शन, संसाधन और सम्मान मिले, तो भारतीय खिलाड़ी किसी भी खेल में दुनिया से मुकाबला कर सकते हैं। आखिरी सरकारों से अपील करती हैं कि क्रिकेट के साथ-साथ हर खेल और हर खिलाड़ी को बराबरी का सम्मान मिले। हर खिलाड़ी पदक के पीछे उतनी ही मेहनत करता है और सम्मान मिलने से हौसला बढ़ता है।

****

लेसन्स फ्रॉम ग्रेट थिंकर्स

जिसके पास ज्ञान है, वही सच में ताकतवर है

थॉमस हॉब्स

जन्म : 5 अप्रैल, 1588
निधन : 4 दिसंबर, 1679

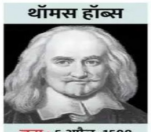

प्रसिद्ध अंग्रेज दार्शनिक और विचारक थे। उन्हें आधुनिक राजनीतिक दर्शन और राज्य सिद्धांत का एक प्रमुख प्रवर्तक माना जाता है।

- जिसके पास ज्ञान होता है, वही सच में ताकतवर होता है।
- जब कोई शासन या नियम नहीं होता, तब हर इंसान दूसरे से लड़ने को तैयार रहता है।
- **समझदार लोग शब्दों का सही मतलब समझते हैं, लेकिन मूर्ख लोग शब्दों को ही सच मान लेते हैं।**
- जब इंसान को फुर्सत मिलती है, तभी वह पूरी गहराई के साथ सोच-विचार कर पाता है।
- प्रकृति का सबसे बड़ा नियम यही है कि शांति की तलाश करें और उसी रास्ते पर चलें।
- मुझे जिंदगी के तेज होने से दिक्कत नहीं है, डर तो बस इसके अचानक खत्म हो जाने से है।
- **सच और झूठ चीजों में नहीं होते, हमारी बोली और बातों में होते हैं।**
- कभी-कभी चुप रहना भी हां कहने जैसा होता है।
- जो बुरा हो चुका है उस पर मत अटकें, आगे जो अच्छा आने वाला है उस पर ध्यान दें।
- अगर भावनाओं को समझ और दिशा न मिले, तो वे इंसान को पागलपन की ओर ले जाती हैं।

Dainik Jagaran Page

सरस्वती देशभक्ति की भावना से बनीं भारत की पहली महिला जासूस

सरस्वती राजमणि का जन्म 1927 में म्यांमार में हुआ था। सरस्वती जासूसी की दुनिया में देशभक्ति की भावना की वजह से आईं। वे आजाद हिंद फौज के लिए काम करती थीं। उन्होंने 'मणि' कोडनेम के साथ कई खुफिया मिशनों को अंजाम दिया। सबसे खतरनाक मिशन पर वह सिर्फ 16 साल की उम्र में गईं थीं। वे ब्रिटिश मिलिट्री अफसरों के घर लड़का बनकर नौकर के तौर पर रहीं और वहां से लगातार खुफिया जानकारी आजाद हिंद फौज तक पहुंचाई। नेता जी सुभाष चंद्र बोस उनकी सूझबूझ से बहुत प्रभावित थे और उनको झांसी रानी बिग्रेड में लेफ्टिनेंट बनाया था। चेन्नई में 13 जनवरी, 2018 को सरस्वती राजमणि की मृत्यु हो गई।

Sci & Tech

ईओएस-एन1 सेटेलाइट कल लांच होगा, धरती का करेगा अवलोकन

- 14 अन्य पेलोड भी अंतरिक्ष में ले जाएगा पीएसएलवी-सी62 राकेट
- वर्ष 2026 में इसरो के इस पहले मिशन की तैयारी पूरी

चेन्नई, प्रेट्र : भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) 12 जनवरी सोमवार को वर्ष 2026 का अपना पहला अंतरिक्ष मिशन लांच करने जा रहा है। इसरो का पीएसएलवी सी62 राकेट अर्थ आब्जर्वेशन सेटेलाइट (ईओएस-एन1) को अंतरिक्ष में ले जाएगा। पीएसएलवी सी62 राकेट ईओएस-एन1 के साथ 14 अन्य पेलोड भी अंतरिक्ष में ले जाएगा। यह मिशन इसरो की कमर्शियल शाखा न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड द्वारा संचालित किया जा रहा है।

इसरो ने शनिवार को कहा, राकेट और उपग्रहों का एकीकरण पूरा हो चुका है। पीएसएलवी सी62 मिशन को 12 जनवरी को सुबह 10:17 बजे श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से प्रक्षेपित करने की योजना है। इस मिशन के लिए 25 घंटे की उल्टी गिनती 11 जनवरी को शुरू होने की उम्मीद है। यह पीएसएलवी की 64वीं उड़ान होगी। इस मिशन के साथ भारतीय धरती से लांच किए गए विदेशी उपग्रहों की कुल संख्या 442 हो जाएगी। पीएसएलवी ने अब तक 63 उड़ानें पूरी की हैं, जिनमें चंद्रयान-1, मंगल आर्बिटर मिशन और आदित्य-एल1 मिशन शामिल हैं।

पीएसएलवी-सी62 मिशन। फाइल

इसरो ने बताया कि इस मिशन के तहत राकेट थाईलैंड और ब्रिटेन द्वारा निर्मित 'पृथ्वी अवलोकन उपग्रह' के साथ 13 अन्य उपग्रहों को प्रक्षेपण के लगभग 17 मिनट बाद इच्छित सूर्य-तुल्यकालिक कक्षा में स्थापित करेगा। हालांकि, राकेट के चौथे चरण (पीएस4) का पृथक्करण और स्पेनिश स्टार्टअप के केस्ट्रल इनिशियल टेक्नालाजी डिमांसट्रेटर कैप्सूल का प्रदर्शन लांचिंग के दो घंटे बाद होने की उम्मीद है। स्पेन की एक स्टार्टअप कंपनी का केआइडी को कक्षा में भेजने के बाद पृथ्वी के वायुमंडल में वापस लाया जाएगा। पीएस4 चरण और केआइडी कैप्सूल पृथ्वी के वायुमंडल में पुनः प्रवेश करेंगे और दक्षिण प्रशांत महासागर में गिरेंगे।

इसरो अध्यक्ष ने तिरुपति में की पूजा : इसरो के अध्यक्ष वी नारायणन ने प्रस्तावित पीएसएलवी-सी62 मिशन की लांचिंग से पहले शनिवार को तिरुपति स्थित वेंकेटेश्वर मंदिर में पूजा अर्चना की। वह राकेट की लघु प्रतिकृति अपने साथ लाए थे।

बदल रहा है धरती का नाइट्रोजन चक्र

मुकुल व्यास

> नाइट्रोजन का संतुलित प्रवाह स्थिर पारिस्थितिकी तंत्र और अच्छी फसल के लिए आवश्यक है

जलवायु परिवर्तन से धरती पर कई चीजें बदल रही हैं। इससे बढ़ती गर्मी, बदलती बारिश और कार्बन डाइआक्साइड के ऊंचे स्तर से फसलों को होने वाला नुकसान हमें दिखाई देता है, पर जलवायु के बदलाव से समूची खाद्य प्रणालियां कितनी प्रभावित हो रही हैं, इसका अंदाजा नहीं है। मिट्टी की सतह के नीचे और पौधों के ऊतकों के अंदर चुपचाप शक्तिशाली परिवर्तन होता है। भूमि के पारिस्थितिकी तंत्र में नाइट्रोजन की हलचल अब बदली हुई जलवायु पर तेजी से प्रतिक्रिया कर रही है। नाइट्रोजन में ये परिवर्तन खाद्य उत्पादन, पानी की सुरक्षा, पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य और लंबे समय तक जलवायु स्थिरता को प्रभावित करते हैं।

पृथ्वी पर जीवन चक्र में नाइट्रोजन की भूमिका महत्वपूर्ण है। यह तत्व नाइट्रोजन प्रोटीन, एंजाइम और आनुवंशिक सामग्री बनाकर जीवन को सहारा देता है। पौधे पत्तियों, जड़ों और अनाज को उगाने के लिए मिट्टी से नाइट्रोजन अवशोषित करते हैं। मिट्टी के जीवाणु जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण जैसी विभिन्न प्रक्रियाओं के माध्यम से नाइट्रोजन को उपयोग योग्य रूपों में बदलते हैं। नाइट्रोजन का संतुलित प्रवाह स्थिर पारिस्थितिकी तंत्र और अच्छी फसल के लिए आवश्यक है। अतिरिक्त नाइट्रोजन हवा और पानी में चला जाता है, जिससे प्रदूषण बढ़ता है और गर्मी बढ़ाने वाली ग्रीनहाउस गैसें बनती हैं। दूसरी ओर नाइट्रोजन की सीमित उपलब्धता फसलों के विकास को धीमा करने के साथ-साथ खाद्य आपूर्ति को भी कम कर देती है। पृथ्वी पर नाइट्रोजन चक्र के बारे में एक नए अध्ययन में चीन के जेजान विश्वविद्यालय के विज्ञानी मियाओ चंग का कहना है कि गर्म होती दुनिया में नाइट्रोजन खाद्य सुरक्षा और पर्यावरणीय स्वास्थ्य दोनों के लिए एक निर्णायक कारक बनती जा रही है। यह अध्ययन दिखाता है कि जलवायु परिवर्तन नाइट्रोजन चक्रों को इस तरह से बदल रहा है, जो या तो सतत विकास का समर्थन कर सकता है या पारिस्थितिकी तंत्र को महत्वपूर्ण सीमाओं से परे धकेल सकता है।

नाइट्रोजन की असमान प्रतिक्रियाएं अब खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण में वैश्विक अंतर को गहरा कर रही हैं। कार्बन डाइआक्साइड की अधिकता नाइट्रोजन को प्रभावित करती है। ज्यादा कार्बन डाइआक्साइड होने पर पौधों के ऊतकों में नाइट्रोजन कम होती है। अनाज में प्रोटीन की मात्रा कम हो जाती है, जिससे पोषण मूल्य कम हो जाता है। पत्तियों और तनों में भी नाइट्रोजन की कमी दिखती है। जलवायु परिवर्तन नाइट्रोजन संतुलन में क्षेत्रीय अंतर को बढ़ाता है। खाद्य असुरक्षित क्षेत्रों को पैदावार के ज्यादा नुकसान और प्रदूषण के दबाव का सामना करना पड़ता है। अतः नाइट्रोजन के उपयोग को समझदारी से प्रबंधित करने के लिए जलवायु से संबंधित समझौतों के दायरे में नाइट्रोजन को भी शामिल किया जाना चाहिए।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

सऊदी, यूएई व भारत मिलकर बनाएंगे ऊर्जा एक्सचेंज

भारत इस एक्सचेंज के लिए समुद्र के नीचे केबल बिछाएगा, परियोजना के लिए सरकार जल्द जारी करेगी निविदा

जयप्रकाश रंजन • जागरण

- सऊदी अरब और यूएई के साथ बड़े ऊर्जा सहयोग को तैयार भारत
- सऊदी अरब और यूएई को भारत बिजली की आपूर्ति कर सकेगा

नई दिल्ली: भारत ऊर्जा क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम उठाने की तैयारी में है। सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के साथ मिलकर भारत एक अनोखे ऊर्जा एक्सचेंज प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है, जिसमें समुद्र के नीचे पावर केबल बिछाई जाएगी। इस परियोजना के तहत भारत सरकार जल्द ही निविदा जारी करेगी, जिससे इन दोनों खाड़ी देशों से भारत तक बिजली का निर्बाध आदान-प्रदान संभव हो सकेगा। बिजली मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने दैनिक जागरण को बताया कि इस एक्सचेंज से जरूरत पड़ने पर भारत इन देशों को बिजली की आपूर्ति भी कर सकेगा। यह परियोजना ऐसे समय में आ रही है जब तेल संसाधनों से समृद्ध सऊदी अरब और यूएई भविष्य में जीवाश्म ईंधन की खपत को कम करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

अधिकारी ने बताया कि हाल ही में समुद्र के नीचे बिजली आपूर्ति करने वाली केबल लाइन बिछाने के लिए निविदा प्रक्रिया शुरू करने का फैसला किया गया है। परियोजना पूरी होने पर यह दुनिया का सबसे सीमा-पार एनर्जी एक्सचेंज बन सकता है। यह कदम न केवल ऊर्जा क्रांति का प्रतीक है, बल्कि वैश्विक सहयोग की मिसाल भी पेश करेगा।

भारत अभी तक अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए सऊदी अरब और यूएई पर निर्भर है। भारत अपने कुल कच्चे तेल आयात का एक बड़ा हिस्सा इन दोनों देशों से करता है। लेकिन ये दोनों देश भविष्य में भारत को एक ऊर्जा आपूर्तिकर्ता देश के तौर पर भी देख रहे हैं। भारत की बढ़ती नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता जैसे- सौर और पवन ऊर्जा, इस गठबंधन को मजबूती प्रदान करेगी। समुद्र के नीचे बिछाई जाने वाली हाई-वोल्टेज डायरेक्ट करेंट (एचवीडीसी) केबल्स से बिजली का कुशल ट्रांसमिशन सुनिश्चित होगा, जो ऊर्जा हानि को न्यूनतम रखते हुए लंबी दूरी तय कर सकेगी। यह गठबंधन तीनों देशों के लिए आर्थिक, पर्यावरणीय और रणनीतिक लाभ भी सुनिश्चित करेगा। भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और यहां ऊर्जा की खपत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रही है। इस परियोजना से भारत को सऊदी अरब और यूएई से सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा आयात करने का अवसर मिलेगा। खासकर उन समयों में जब घरेलू उत्पादन में कमी हो। वैसे रेगिस्तानी इलाके में सौर ऊर्जा उत्पादन में कई तरह की चुनौतियां होती हैं लेकिन सऊदी अरब से भारत तीन घंटे आगे है। यानी सऊदी में देर शाम तक सौर ऊर्जा से तैयार बिजली को रियल टाइम में भारत आयात किया जा सकता है। दिन के अन्य समय भारत में तैयार सौर बिजली की आपूर्ति सऊदी अरब और यूएई को हो सकेगी। साथ ही सौर ऊर्जा में भारत इन दोनों देशों को प्रौद्योगिकी व मैन-पावर देगा।

यह एक्सचेंज तीनों देशों के बीच ऊर्जा ग्रिड को इंटरकनेक्ट करेगा, जिससे बिजली की कमी या अधिशेष की स्थिति में तत्काल सहायता संभव होगी। यह वैश्विक ऊर्जा बाजार में स्थिरता लाएगा और जलवायु परिवर्तन से लड़ाई में योगदान देगा। माना जा रहा है कि उक्त ऊर्जा गठबंधन भारत, सऊदी अरब और यूएई के बीच पहले से मजबूत रणनीतिक संबंधों को और गहराई प्रदान करेगा।

नवीकरणीय ऊर्जा पर फोकस कर रहा सऊदी अरब

तेल पर आधारित अर्थव्यवस्था वाला सऊदी अरब 'विजन 2030' के तहत जीवाश्म ईंधन से दूर हटकर नवीकरणीय ऊर्जा पर फोकस कर रहा है। इस गठबंधन से सऊदी को भारत से सौर और अन्य स्वच्छ ऊर्जा आयात करने का विकल्प मिलेगा, जो उसके घरेलू ग्रिड को स्थिर रखने में मदद करेगा। सऊदी अरब सरकार वैश्विक स्तर पर एक जिम्मेदार ऊर्जा उत्पादक देश के तौर पर अपनी छवि बनाने की कोशिश कर रही है। इसी तरह से यूएई ने 'नेट जीरो 2050' का लक्ष्य रखा है। वहां नवीकरणीय ऊर्जा में भारी निवेश किया जा रहा है। लेकिन बढ़ते शहरीकरण और औद्योगिक मांग के कारण वहां वर्ष 20230 के बाद स्वच्छ ऊर्जा की जरूरत तेजी से बढ़ने की संभावना है। साथ ही, यह गठबंधन यूएई को ऊर्जा व्यापार में एक क्षेत्रीय हब बनाने में मदद करेगा, जहां वह अन्य खाड़ी देशों के साथ भी समन्वय कर सकेगा।

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

2025 में महासागरों में जमा हुई रिकार्ड तोड़ गर्मी

अध्ययन ▸ महासागरों के ऊपरी दो किमी में ऊर्जा में अनुमानित 23 जेटाजूल की वृद्धि हुई

महासागरों में अतिरिक्त गर्मी वायुमंडल में गर्मी और नमी को बढ़ाकर देती है खराब मौसम को बढ़ावा

नई दिल्ली, प्रेट्र : एक अध्ययन के अनुसार, 2025 में पृथ्वी के महासागरों में जमा गर्मी ने रिकार्ड तोड़ दिए हैं। महासागरों के ऊपरी दो किलोमीटर में ऊर्जा में अनुमानित 23 जेटाजूल की वृद्धि हुई, जो 2023 में दुनिया की बिजली ऊर्जा खपत का लगभग 200 गुना है। चाइनीज एकेडमी आफ साइंसेज के नेतृत्व में शोधकर्ताओं की एक अंतरराष्ट्रीय टीम ने कहा कि दुनिया के 33 प्रतिशत महासागरीय क्षेत्र में आधुनिक माप शुरू होने के बाद से अब तक के तीन सबसे गर्म सालों में रहा। उन्होंने आगे कहा कि महासागरों की गर्मी बढ़ने से पानी फैलता है, जिससे दुनिया भर में समुद्र का स्तर बढ़ता है। महासागरों में अतिरिक्त गर्मी वायुमंडल में गर्मी और नमी बढ़ाकर खराब मौसम को और भी तेज करती करती है। टीम ने कहा कि जब तक दुनिया नेट जीरो ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन तक नहीं पहुंच जाती, तब तक महासागरों के रिकार्ड तोड़ते रहने की उम्मीद है।

तापमान वृद्धि का होगा वैश्विक असर। फाइल

समुद्र रिकार्ड स्तर पर सबसे गर्म : न्यूजीलैंड की ऑकलैंड यूनिवर्सिटी के मानद एकेडमिक और जर्नल एडवांसेज इन एटमॉस्फेरिक साइंस में प्रकाशित सामग्री के सहायक लेखक केविन ट्रेनबर्थ ने कहा कि समुद्र रिकार्ड स्तर पर सबसे गर्म है। हम एक बहुत अलग ग्रह बनाने की ओर बढ़ रहे हैं, क्या हम सच में ऐसा करना चाहते हैं?" चाइनीज एकेडमी आफ साइंसेज और अमेरिका के नेशनल ओशनिक एंड एटमास्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (एनओएए) में रखे गए डाटासेट का विश्लेषण किया गया। लेखकों ने लिखा, नतीजों से पता चलता है कि 2025 में वैश्विक स्तर पर महासागर गर्म होता रहा और ऊपरी 2,000 मीटर ओएचसी (महासागर हीट कंटेंट) अब तक देखे गए सबसे ऊंचे लेवल पर पहुंच गया, जबकि पूरे साल ला नीना की कमजोर स्थिति बनी रही।

लगभग 23 जेटाजूल गर्मी प्राप्त की : दुनिया के मौसम और जलवायु पैटर्न अल नीनो दक्षिणी दोलन (ईएनएसओ) घटना से संचालित होते हैं, जिसमें अल नीनो और ला नीना 'गर्म' और 'ठंडे' चक्र बनाते हैं। अल नीनो तापमान और वर्षा में वृद्धि से संबंधित है, और ला नीना विपरीत प्रभावों से।

उन्होंने कहा कि वैश्विक महासागर ने 2024 की तुलना में लगभग 23 जेटाजूल गर्मी प्राप्त की, जिसमें लगभग 33 प्रतिशतवैश्विक महासागर क्षेत्र का ऐतिहासिक रिकार्ड में तीन सबसे गर्म तापमान तक पहुंच गया। उष्णकटिबंधीय और दक्षिण अटलांटिक, भूमध्य सागर, उत्तरी हिंद महासागर और दक्षिणी महासागर उन क्षेत्रों में से थे, जहां 2025 में जमा गर्मी में रिकार्ड ऊंचाई देखी गई। अध्ययन में पाया गया कि विश्व स्तर पर समुद्र की सतह का औसत तापमान 2024 की तुलना में 0.12 डिग्री सेल्सियस कम था, लेकिन फिर भी यह रिकार्ड पर तीसरा सबसे गर्म था।

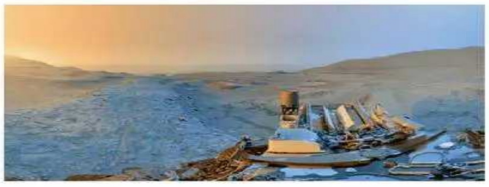

Dainik Bhaskar

मंगल ग्रह पर पृथ्वी जैसा सूर्यास्त... नासा के यान ने भेजी तस्वीर

वॉशिंगटन | नासा के क्यूरियोसिटी रोवर ने मंगल ग्रह से एक अनोखी तस्वीर भेजी है, जो पृथ्वी पर दिखने वाले सूर्यास्त की तरह है। यह क्यूरियोसिटी रोवर ने गेल क्रेटर की एक चोटी से ली थी। बाद में नासा ने इस पैनोरमिक 'प्रोसेस्ड' कर पोस्टकार्ड की तरह जारी किया। इसमें मंगल की सतह और आसमान का दृश्य पृथ्वी की शाम की तरह दिखता है।

भारत के 'आदित्य' ने सुलझाई सौर तूफानों की पहेली

अध्ययन

> आदित्य-एल1 मिशन ने सौर तूफानों के पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभाव को समझने में की मदद, अंतरिक्ष मौसम से जुड़ी घटनाओं को समझने और उनके रियल टाइम आकलन के लिए अहम है यह अध्ययन

बेंगलुरु, प्रेट्र : भारत के 'आदित्य' ने सौर तूफानों की पहेली सुलझा दी है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने शनिवार को कहा कि आदित्य-एल1 सौर मिशन से यह समझने में मदद मिली है कि शक्तिशाली सौर तूफान पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को कैसे प्रभावित कर सकता है।

इसरो ने बयान में कहा, सबसे गंभीर प्रभाव सौर तूफान के अशांत (टर्बुलेंट) क्षेत्र के टकराने के दौरान देखे गए। इसरो ने कहा कि यह अध्ययन अंतरिक्ष मौसम से जुड़ी घटनाओं को समझने और उनके रियल टाइम आकलन की अहमियत को रेखांकित करता है।

दिसंबर 2025 में 'एस्ट्रोफिजिकल जर्नल' में प्रकाशित महत्वपूर्ण अध्ययन में इसरो के विज्ञानियों और शोध छात्रों ने अक्टूबर 2024 में पृथ्वी को प्रभावित करने वाली अंतरिक्ष की बड़ी मौसमी घटना का विस्तृत विश्लेषण किया।

इस अध्ययन में भारत की पहली सौर वेधशाला आदित्य-एल1 से प्राप्त डाटा के साथ-साथ अन्य अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष अभियानों के डाटा का इस्तेमाल किया गया, ताकि सूर्य से निकले सौर प्लाज्मा के विशाल विस्फोट के पृथ्वी पर पड़े प्रभाव को समझा जा सके।

आदित्य एल1 मिशन। फाइल

क्या है स्पेस वेदर

अंतरिक्ष मौसम (स्पेस वेदर) से तात्पर्य अंतरिक्ष में उत्पन्न उन परिस्थितियों से है, जो सूर्य पर होने वाली अस्थायी गतिविधियों जैसे सौर प्लाज़्मा विस्फोट के कारण बनती हैं। इससे पृथ्वी पर उपग्रहों, संचार एवं दिशा सूचक सेवाओं तथा विद्युत ग्रिड अवसंरचना प्रभावित होती हैं।

सौर तूफान का क्या हुआ प्रभाव

इसरो के अनुसार सौर तूफान के टर्बुलेंट क्षेत्र ने पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को अत्यधिक रूप से संकुचित कर दिया, जिससे वह असामान्य रूप से पृथ्वी के बहुत करीब आ गया और कुछ समय के लिए भू-स्थिर कक्षा (जियोस्टेशनरी आर्बिट) में स्थित कुछ उपग्रह उनके संपर्क में आ गए। ऐसी घटना केवल अत्यंत गंभीर अंतरिक्ष मौसम घटनाओं के दौरान ही होती है। अध्ययन में यह भी सामने आया कि टर्बुलेंट चरण के दौरान ध्रुवीय (आरोरल) क्षेत्रों यानी उच्च अक्षांशों में विद्युत धाराएं अत्यधिक तीव्र हो गईं। यह प्रक्रिया ऊपरी वायुमंडल को गर्म कर सकती है।

वैज्ञानिकों को सबसे तेज घूमने वाला ऐस्टरॉइड मिला

न्यूयॉर्क। वैज्ञानिकों ने अब तक का सबसे तेज घूमने वाला ऐस्टरॉइड '2025 एमएन45' खोजा है। लगभग 2,329 फीट चौड़ा यह विशाल पिंड महज 1.88 मिनट में अपना एक चक्कर पूरा कर लेता है। 1,900 ऐस्टरॉइड्स के अध्ययन के बाद पहचाने गए 19 तेज घूमने वाले पिंडों में यह सबसे प्रमुख है। यह खोज अंतरिक्ष विज्ञानियों को ऐस्टरॉइड्स की मजबूती और उनकी संरचना को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेगी, जो भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों के लिए महत्वपूर्ण है।

कनाडा में डायबिटीज के मरीज को दी गई इंसुलिन

1911 में आज ही कनाडा के टोरंटो में पहली बार डायबिटीज के मरीज को इंसुलिन दी गई थी। 14 वर्षीय लियोनार्ड थाम्पसन को दी गई इंसुलिन शुद्ध नहीं थी। इससे उनकी सेहत बिगड़ गई थी। हालांकि बाद में वे ठीक हो गए।

पेरू में आए बर्फीले तूफान ने ली 2000 लोगों की जान

1962 में आज ही पेरू के उत्तर-पश्चिम हिस्से में बर्फीले तूफान और चट्टान खिसकने से कम से कम 2 हजार लोगों की मौत हो गई थी। उस समय पेरू की सबसे ऊंची पहाड़ी एंडीज से अचानक लाखों टन बर्फ, चट्टानें, कीचड़ और मलबा नीचे गिरने लगा। ये हादसा आधी रात को हुआ था।

Dainik Jagaran Page

BIHAR

देशभर में सौ बनेंगी, कम तीव्रता वाले भूकंपों का पता लगाना संभव होगा

रोहतास समेत छह जिलों में बनेंगी भूकंपीय वेधशाला

हि एक्सक्लूसिव

- पटना, पूर्णिया, मुजफ्फरपुर, दरभंगा और औरंगाबाद में भी होगी नयी वेधशाला
- भूकंप के लिहाज से बिहार अधिक संवेदनशील, कई जिले जोन-5 और 6 में शामिल

■ धीरज

पूर्णिया। देश में भूकंप का पता लगाने की क्षमता में सुधार के लिए 100 नयी भूकंपीय वेधशाला (सिस्मोलॉजिकल आब्जरवेट्री) की स्थापना की जाएगी। इनमें से छह केंद्र बिहार में प्रस्तावित हैं। इसमें कम तीव्रता वाले भूकंपों को पता लगाना संभव होगा और आपदा प्रबंधन से जुड़े सभी संबंधित विभागों तक कम से कम समय में सूचना पहुंचायी जा सकेगी। बिहार में पटना, पूर्णिया, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, रोहतास एवं औरंगाबाद में नयी वेधशाला स्थापित होगी। यह पहल राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र की ओर से की जा रही है।

वेधशाला में सिस्मिक पियर बनाया जायेगा, जहां सेंसर लगेंगे: लॉजिस्टिक सहायता के रूप में एक सुरक्षित सरकारी परिसर में 15-15 फीट के खाली भूखंड में भूकंपीय उपकरणों को रखने के लिए एक उपयुक्त संरचना बनाई जायेगी। भवन के अंदर एक सिस्मिक पियर बनाया जायेगा, जहां सेंसर लगाये जायेंगे। उपकरणों को विद्युत आपूर्ति के लिये वेधशाला भवन के ऊपर दो सौर पैनल (150 वाट) भी लगाये जायेंगे। सिस्मोग्राफ (भूकंप रिकार्डिंग उपकरण) को कठोर स्थान पर स्थापित किया जायेगा और इसे शोर वाले स्रोतों से लगभग 500 मीटर या उससे अधिक दूरी पर रखा जायेगा।

बिहार को पहले से ज्यादा खतरा, कई जिले अब जोन छह और पांच में: हिमालय के करीब और टेक्टोनिक प्लेटों के मिलन बिंदु पर स्थित होने के कारण भूकंप के लिहाज से बिहार अत्यधिक संवेदनशील है। राज्य का बड़ा हिस्सा (लगभग 80 प्रतिशत) सिस्मिक जोन 4 और 5 (उच्च जोखिम) में आता है। नये वर्गीकरण के अनुसार मधुबनी व दरभंगा जैसे जिले सिस्मिक जोन-6 (सबसे उच्च जोखिम) में आ गये हैं, जो पहले से ज्यादा खतरे का संकेत है। इसी तरह सिस्मिक जोन-5 (उच्चतम जोखिम) वाले जिलों में किशनगंज, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, अररिया, सीतामढ़ी, दरभंगा, मधुबनी, भागलपुर, बांका, जमुई, मुंगेर, कटिहार, पूर्णिया शामिल है।

पूर्णिया में वेधशाला से दो प्रमंडलों को मिलेगा लाभ

जिला आपदा प्रबंधन कार्यालय के एडीएमओ प्रणव कुमार ने बताया कि पूर्णिया के बनमनखी में भूकंपीय वेधशाला स्थापित की जाएगी। जिलाधिकारी के दिशा-निर्देश के बाद प्रस्ताव तैयार कर भेज दिया गया है। बनमनखी अनुमंडल में भूकंपीय वेधशाला होने से सीमांचल और कोसी दोनों प्रमंडलों को इसका लाभ मिलेगा क्योंकि बनमनखी सीमांचल और कोसी के केंद्र में है। उन्होंने कहा कि भूकंप के दृष्टिकोण से सीमांचल, कोसी और मिथिलांचल के इलाके अतिसंवेदनशील हैं। इस क्षेत्र के कई इलाके सिस्मिक जोन पांच और छह में शामिल हैं।

पंचायती राज को मिला स्कॉच ऑर्डर ऑफ मेरिट सम्मान

जल-जीवन-हरियाली

- निदेशक ने कहा-अब तक 25,579 सार्वजनिक कुओं का जीर्णोद्धार हुआ

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। जल-जीवन-हरियाली अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए पंचायती राज विभाग को स्कॉच 'ऑर्डर ऑफ मेरिट' प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया है।

विभाग के निदेशक नवीन सिंह ने कहा कि अब तक 25,579 सार्वजनिक कुओं का जीर्णोद्धार हुआ है। 19,033 सोख्ते का भी निर्माण हुआ है।

निदेशक ने कहा कि बिहार की ग्रामीण संस्कृति में कुओं का विशेष स्थान है। विशेषकर ग्रामीण महिलाओं के लिए ये कुएं सामाजिक विमर्श का केंद्र रहे हैं। इस परियोजना के माध्यम से न केवल पारंपरिक संरचनाओं को बचाया गया है, बल्कि कृषि और हरित आवरण को भी नया जीवन मिला है। इन सभी कार्यों की निगरानी 'ई-ग्राम स्वराज' पोर्टल के माध्यम से की जा रही है, जिससे पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता बनी रहे।

उन्होंने भविष्य की जल-जीवन-हरियाली अभियान योजनाओं का खाका पेश करते हुए कहा कि अब सभी पंचायत सरकार भवनों में 'छत वर्षा जल संचयन' संरचनाओं का निर्माण किया जा रहा है। पंचायत वन महोत्सव के माध्यम से राज्य के हर वार्ड में 5-5 पौधे लगाने का प्रस्ताव है, जिससे पर्यावरण को और मजबूती मिलेगी।

एपीडा भारती ने किया चयन, अब प्रशिक्षण मिलेगा

बिहार के आठ स्टार्टअप अब विदेशों में सीधे करेंगे कृषि उत्पादों की मार्केटिंग

भास्कर न्यूज | पटना

बिहार के आठ स्टार्टअप अब सीधे विदेशों में कृषि उत्पादों का निर्यात कर सकेंगे। एपीडा भारती की ओर से देश के 100 स्टार्टअप का चयन किया है। इसमें बिहार के 8 स्टार्टअप हैं।

एपीडा बिहार इन आठ स्टार्टअप को ट्रेंड करेगा। इन्हें कृषि उत्पादों की गुणवत्ता और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप उत्पाद बनाने के बारे में बताया जाएगा। चयनित स्टार्टअप में आईआईटी पास्तावाला, रूट एण्ड सूट, जीतवान, मिश्रा एग्रो इंटरप्राइजेज, भारती नेजुरलफूड प्राइवेट लिमिटेड, महालता फूड्स प्राइवेट लिमिटेड और एग्रोबायोटिक सिस्टम प्राइवेट लिमिटेड है। -शेष पेज-15

वो सबकुछ जो आपके लिए जानना जरूरी है

जरूरत क्यों? ... अभी सारे स्टार्टअप किसी न किसी माध्यम से विदेशों तक उत्पाद भेजते हैं। उन्हें अधिक खर्च उठाना पड़ता है और समय भी अधिक लगता है। कई बार जानकारी के अभाव में कृषि उत्पाद वापस भी आ जाते हैं।

किस-किस चीज की मार्केटिंग? ... मखाना, सहजन के पाऊडर, सूखी सब्जियां, फल, जैविक सब्जियां, मखाना और मिलेट का पास्ता और माइक्रोनी के अलावे मक्का, शहद की सीधे मार्केटिंग कर सकेंगे।

Hindustan Page

नई दिल्ली में वित्त मंत्रियों की बैठक के दौरान केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मिलते बिहार के वित्त मंत्री बिजेंद्र प्रसाद यादव। • हिन्दुस्तान

संतुलित विकास के लिए उद्योगों की स्थापना हो

बोले बिजेंद्र यादव

- केंद्रीय वित्त मंत्री के साथ 'बजट पूर्व परामर्श' में मांग की गई
- राजकोषीय संघवाद में बढ़ते ढांचागत असंतुलन की ओर भी ध्यान दिलाया

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। वित्त मंत्री बिजेंद्र प्रसाद यादव ने राज्य के संतुलित विकास के लिए उद्योगों की स्थापना पर केंद्रीय बजट में विचार किए जाने का अनुरोध किया है। ताकि, बिहार संतुलित विकास हासिल कर सके, रोजगार के अवसर पैदा कर सके और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में अपने योगदान को मजबूती दे सके।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में आयोजित बजट पूर्व परामर्श बैठक में बिजेंद्र यादव ने कहा कि देश के अन्य राज्यों की तर्ज पर बिहार में उद्योगों की स्थापना पर विचार किया जाए। कहा कि जल संसाधन की प्रचुरता, समृद्ध जैव-विविधता, कुशल श्रमिकों की उपलब्धता और सहयोगपूर्ण वातावरण बिहार में औद्योगिक विकास के लिए अनुकूल माहौल मुहैया कराते हैं। राज्य में नये उद्योगों की स्थापना के लिए काफी संभावना है, जो राज्य के प्राकृतिक और मानव संसाधनों का उपयोग ही नहीं करेंगे, बल्कि अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे। इसके पूर्व उन्होंने वर्ष 2025-26 के केंद्रीय बजट में किसान केंद्रित योजनाओं एवं अन्य प्रावधानों के लिए आभार जताया और कहा कि सरकार ने सात निश्चय-3 के रूप में सात निश्चत कार्यक्रम का तीसरा चरण शुरू किया है। इस कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए आगामी केंद्रीय बजट में मार्गदर्शन एवं संस्थागत समर्थन का अनुरोध किया। वहीं, उन्होंने कृषि एवं उससे संबंधित क्षेत्र में रोजगार के प्रचुर अवसर उपलब्ध कराने की क्षमता का उल्लेख किया और कहा कि उच्च उपज वाले कृषि व्यवसाय मॉडल में बदलना जरूरी है।

अतिरिक्त उधार लेने की सुविधा मिले

उन्होंने कहा कि बिहार मजबूत वृद्धि दर्शाने के बाद भी ऐतिहासिक और भौगोलिक प्रतिकूलताओं से जूझ रहा है। जिसके कारण राष्ट्रीय स्तर के समकक्ष पहुंचने के लिए राज्य को काफी उच्च स्तर की पूंजी सघनता की जरूरत है। इस खाई को पाटने के लिए उन्होंने कनवर्जेंस आधारित राजकोषीय प्रोत्साहन का प्रस्ताव किया। उन्होंने कहा कि बिहार को हर वर्ष 3 प्रतिशत की पिछली सीमा के साथ, सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) के 2.0 प्रतिशत अतिरिक्त उधार लेने की सुविधा दी जाए।

एनआईटीः थ्रीडी प्रिंटिंग की पढ़ाई से खुलेगा रोजगार का रास्ता

■ अभिषेक कुमार

- 05 वर्षों में दो हजार इंजीनियरिंग छात्रों को प्रशिक्षण देने का लक्ष्य
- थ्रीडी प्रिंटिंग एवं एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग पर फिनिशिंग स्कूल प्रोग्राम शुरू

पटना। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) पटना के बिहटा कैंपस में 'थ्रीडी प्रिंटिंग एवं एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग टेक्नोलॉजी' पर फिनिशिंग स्कूल प्रोग्राम की शुरुआत की गई। यह कार्यक्रम बिहार और पश्चिम बंगाल के इंजीनियरिंग छात्रों को उन्नत विनिर्माण तकनीकों में दक्ष बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इससे हजारों युवाओं को रोजगार योग्य बनाने का लक्ष्य रखा गया है। तेजी से बदलते औद्योगिक परिदृश्य में यह पहल युवाओं को भविष्य की जरूरतों के अनुरूप तैयार करने में सहायक होगी।

यह फिनिशिंग स्कूल प्रोग्राम भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित है, जबकि इसे सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (सी-डैक), कोलकाता द्वारा राष्ट्रीय कौशल विकास पहल के तहत लागू किया जा रहा है। एनआईटी के एकेडमिक डीन प्रो. एमपी सिंह ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य पारंपरिक शैक्षणिक पाठ्यक्रम और उद्योगोन्मुख व्यावहारिक कौशल के बीच की खाई को पाटना है, ताकि छात्र थ्रीडी प्रिंटिंग, डिजाइन थिंकिंग, मटेरियल साइंस और एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग जैसे उभरते क्षेत्रों में वास्तविक अनुभव प्राप्त कर सकें। एनआईटी पटना के बिहटा कैंपस में संचालित परियोजना के तहत पांच वर्षों में करीब दो हजार इंजीनियरिंग छात्रों को प्रशिक्षण देने का लक्ष्य है। इस दौरान छात्रों को आधुनिक थ्रीडी प्रिंटर, सॉफ्टवेयर टूल्स, प्रोटोटाइप डेवलपमेंट व इंडस्ट्रियल एप्लीकेशन से रूबरू कराया जाएगा। बताया कि एनआईटी बिहटा कैंपस में इसकी मशीन लगाई जाएगी। इसकी अनुमति मंत्रालय से मिल चुकी है। एनआईटी पटना का यह कार्यक्रम छात्रों के लिए रोजगार व स्वरोजगार की नई संभावनाओं के द्वार खोलेगा। प्रशिक्षण प्राप्त छात्र न केवल बड़ी विनिर्माण कंपनियों में रोजगार पा सकेंगे, बल्कि स्टार्टअप, नवाचार आधारित उद्यम शुरू करने में सक्षम होंगे।

'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियानों को गति देगा

एनआईटी पटना के निदेशक प्रो. पीके जैन ने बताया कि यह फिनिशिंग स्कूल प्रोग्राम छात्रों को भविष्य की विनिर्माण आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करेगा और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी मिशनों के साथ संस्थान की सहभागिता को और मजबूत बनाएगा। उन्होंने कहा कि यह 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियानों को गति देगा। विशेषज्ञों के अनुसार, थ्रीडी प्रिंटिंग और एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग का उपयोग एयरोस्पेस, ऑटोमोबाइल, मेडिकल डिवाइस, कंस्ट्रक्शन और रक्षा क्षेत्र में तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे में इस क्षेत्र में प्रशिक्षित मानव संसाधन की मांग भी लगातार बढ़ रही है।

सांसद निधि पर राज्यसभा के उपसभापति के विचार (तीसरी किस्त)

बिहार : एक नई ज्ञानयात्रा की दहलीज पर

हरिवंश
उपसभापति, राज्यसभा

कभी-कभी इतिहास का पहिया लौटकर वही सवाल पूछता है, जिनका उत्तर हमने जाने-अनजाने अधूरा छोड़ दिया था। आज बिहार के सामने भी वैसा ही प्रश्न है? क्या वह अपनी प्राचीन नालंदा-विक्रमशिला की गौरवगाथा को आधुनिक काल की प्रयोगशालाओं और तकनीकी नवाचारों से जोड़ पाएगा? क्या उस खोई हुई 'ज्ञानभूमि' की विरासत को पुनर्जीवित कर एक नई सभ्यता की दिशा में दीप जला सकेगा?

दूसरे विश्व युद्ध के बाद का दौर आधुनिक तकनीक की नींव रख रहा था। टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स में काम करने वाला एक युवा इलेक्ट्रिकल इंजीनियर जैक किल्बी। ऐसी सोच पर काम करना शुरू किया, जिसने दुनिया बदल दी। किल्बी ने एक छोटे-से सर्किट में 'चिप' का आविष्कार किया। तब उसने खुद भी नहीं सोचा होगा कि एक दिन मानव सभ्यता का बड़ा हिस्सा इन्हीं सूक्ष्म 'चिपों' में सिमट जाएगा। 21वीं सदी में दुनिया का दबदबा हथियारों से नहीं, बल्कि इन छोटी चिप्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की सर्वोच्चता से तय होगा। याद रखिए 1900 के दशक में जहां कंप्यूटरों को चलाने के लिए भारी-भरकम वैक्यूम ट्यूब का इस्तेमाल होता था, वहीं किल्बी ने एक छोटी-सी प्लेट पर सभी विद्युत घटकों को समेट दिया। 1957 में बना यही वह पहला 'इंटीग्रेटेड सर्किट' (आईसी) था। इसे आज 'चिप' के नाम से जानते हैं। जो युग कल तक औद्योगिक युग था, वह आज 'ज्ञानयुग' बन गया है। और ज्ञान, आधुनिक सभ्यता की नई मुद्रा (करेंसी)।

हार्वर्ड और स्टैनफोर्ड जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों को करीब से देखने का अवसर मिला। 1994 में अमेरिकी सूचना सेवा कार्यक्रम के तहत देशभर से वरिष्ठ पत्रकारों, संपादकों को चुना गया था। इस यात्रा ने राय बदली। कैसे बड़े विश्वविद्यालय ज्ञान का सृजन करते हैं? फिर मन में सवाल उठा-क्या बिहार, जिसने कभी नालंदा की रोशनी से एशिया को आलोकित किया था, वह फिर से वैसा ही ज्ञानकेंद्र बन सकता है? क्यों 1990 के दशक में जब दक्षिण भारत के राज्य तकनीकी संस्थानों की नींव रख रहे थे, तब बिहार 'चरवाहा विद्यालयों' के प्रयोग में उलझा हुआ था?

आज फिर हम इतिहास के अहम मोड़ पर खड़े हैं। एआई हमारे समाज का ढांचा बदल रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश आज सेमी-कंडक्टर ईको सिस्टम बनाने और दुनिया की बेहतरीन प्रतिभाओं को आकर्षित करने पर जोर दे रहा है। भारत न केवल एआई में नवाचार को बढ़ावा दे रहा है, बल्कि 'क्रिटिकल मिनरल्स' के मामले में भी आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अपनी रणनीति बदल रहा है। इसी कड़ी में संस्थागत ढांचे का निर्माण अनिवार्य है। इसकी शुरुआत हो गई है। केंद्र सरकार ने पहले ही तीन 'एआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' की घोषणा कर दी है।

सवाल उठता है कि तकनीक की इस वैश्विक दौड़ में बिहार कहां खड़ा है? मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार अब अपनी प्रतिभाओं को संवारने और उभरते क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए शिक्षा व्यवस्था को नए सिरे से गढ़ने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। पुनर्निर्माण की नई दिशा अब जब समाज के हर पहलू को नया आकार दे रही है। बिहार के पास अवसर है कि वह इस यात्रा में सहभागी बने। इसी भावना से अपनी सांसद निधि से तीन प्रमुख संस्थानों की स्थापना हेतु राशि समर्पित की। बोधगया के मगध विश्वविद्यालय में 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस संस्थान', पटना के चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान (सीआईएमपी) में पब्लिक पॉलिसी अध्ययन केंद्र और उसी संस्थान में एक व्यवसाय नवाचार एवं इन्क्यूबेशन केंद्र। मगध विश्वविद्यालय में 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस संस्थान' के लिए 20 करोड़ की प्रारंभिक राशि आवंटित की गई। यह एआई संस्थान केवल मशीन लर्निंग, साइबर सुरक्षा या रोबोटिक्स की औपचारिक शिक्षा नहीं देगा; यह बिहार की समस्याओं के समाधान में भी भागीदार बनेगा। वहीं पटना के चंद्रगुप्त संस्थान में प्रस्तावित 'पब्लिक पॉलिसी सेंटर' और 'नवाचार केंद्र' उसी विचार का विस्तार हैं। सीआईएमपी को हाल ही में नीति आयोग द्वारा 'लीड नॉलेज इंस्टीट्यूट' घोषित किया गया है। जार्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी से साझीदारी हुई है। अक्सर कहा जाता है कि प्रतिभा को सही अवसर की तलाश होती है। यदि बिहार में स्थानीय स्तर पर ही ऐसी सुविधाएं और अवसर उपलब्ध कराए जाएं, जो इस युवा मेधा को निखार सकें, तो राज्य की तकदीर बदलना तय है। इसे ध्यान में रखकर इन दोनों केंद्रों के लिए 9.43 करोड़ की सहायता स्वीकृत हुई है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'आत्मनिर्भर भारत' की परिकल्पना वस्तुतः बुद्ध की उसी प्रेरणा का आधुनिक रूप है-'अप्प दीपो भव'। यह प्रयास उसी संदेश की विशिष्ट प्रतिध्वनि है। बिहार अपनी नियति स्वयं गढ़े, अपने ज्ञान और प्रतिभा से नया भारत रचे। आज भारत के पास दो लाख से अधिक स्टार्टअप हैं। 21 लाख से अधिक लोगों को नई रोजी-रोटी मिल चुकी है। नवाचार को शुरुआती स्तर पर मदद देने के लिए वर्ष 2021 में 'स्टार्टअप इंडिया सीड फंड स्कीम' की शुरुआत की गई। इसके लिए 945 करोड़ का कोष (कार्पस) निर्धारित किया गया। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग ने इस दिशा में कैटलिस्ट की भूमिका निभाई है। विभाग के प्रयासों से अबतक 1,173 स्टार्टअप्स में लगभग 21,276 करोड़ के बड़े निवेश को सुगम बनाने में सफलता मिली है। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि देश में जमीनी स्तर पर नए उद्यमियों को तकनीकी मार्गदर्शन, वित्तीय स्थिरता प्रदान करने के लिए भी एक मजबूत तंत्र तैयार किया जा चुका है। पर, यह आंकड़ा तभी पूरा होगा जब पटना, गया, दरभंगा और भागलपुर भी इस नक्शे पर नवाचार के केंद्र बनें। क्योंकि विकास की कोई दिशा स्थायी नहीं, जब तक वह समावेशी न हो। और बिहार के बिना भारत का 'विकसित भारत 2047' का स्वप्न अधूरा रहेगा। निकट भविष्य में पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का भी।

याद रखें, जब इतिहास किसी क्षेत्र पर करुणा और दायित्व दोनों का वरदान देता है, तब वह क्षेत्र केवल भौगोलिक इकाई नहीं रहता-वह चेतना की भूमि बन जाता है। नालंदा की राख से यदि एक नया नालंदा उठ सके, मगध के बोधिवृक्ष के नीचे यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अंकुर फूट सके, तो बिहार अपनी सारी चुनौतियों के बावजूद भविष्य का पहला अध्याय लिख सकता।

(ये लेखक के निजी विचार हैं।)

25 नवंबर 2025 को मगध विवि में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस संस्थान का शिलान्यास राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने किया था। इस मौके पर मौजूद राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश और विश्वविद्यालय के कुलपति एसपी शाही।

NATIONAL

प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के प्रमुख एस महेंद्र देव ने कहा

भारत ने प्रगति की, 'मध्यम आय के जाल' से बचने की जरूरत

नई दिल्ली, 10 जनवरी (भाषा)।

प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (ईएसी-पीएम) के प्रमुख एस महेंद्र देव ने शनिवार को कहा कि भारत ने कई मोर्चों पर प्रगति की है और देश को मध्यम आय के जाल से बचना चाहिए।

उन्होंने कहा कि एक समृद्ध और समावेशी समाज एवं अर्थव्यवस्था बनाने के लिए देश को अपनी उपलब्धियों को आगे बढ़ाना चाहिए। देव ने 104वें स्काच शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि भारत ने जीएसटी सुधारों, रेरा, आइबीसी, बीमा में 100 फीसद एफडीआइ, परमाणु ऊर्जा में निजी भागीदारी, गुणवत्ता नियंत्रण आदेश और कारोबारी सुगमता की पहल सहित कई सुधार किए हैं।

उन्होंने कहा, भारत ने कई मोर्चों पर प्रगति की है। विभिन्न क्षेत्रों में संसाधनों के सही आवंटन, मजबूत सुधारों और उच्च वृद्धि दर के साथ भारत अपनी वैश्विक आर्थिक हिस्सेदारी में उल्लेखनीय बढ़त दर्ज कर सकता है। प्रख्यात अर्थशास्त्री ने कहा कि राजनीतिक स्थिरता, व्यापक आर्थिक स्थिरता और एक बड़ा घरेलू बाजार भारत की प्रमुख ताकतें हैं। उन्होंने कहा, भारत को मध्यम आय के जाल से बचना चाहिए और एक ऐसा समाज और अर्थव्यवस्था बनाने के लिए काम करना चाहिए जो समृद्ध, समावेशी और प्रकृति के अनुकूल हो। मध्यम आय का जाल ऐसी स्थिति है, जहां एक मध्यम आय वाला देश बनने के बाद आर्थिक वृद्धि स्थिर हो जाती है और वह उच्च आय वाला देश नहीं बन पाता है। उन्होंने कहा, विनिर्माण क्षेत्र केवल 11-12 फीसद लोगों को रोजगार देता है, जिसकी जीडीपी में 17 फीसद हिस्सेदारी है। विनिर्माण और सेवाओं को बढ़ाना आवश्यक है। देव ने कहा कि बजट और पूंजी निर्माण के माध्यम से सरकारी निवेश महत्वपूर्ण है, लेकिन निजी पूंजी में उल्लेखनीय वृद्धि होनी चाहिए।

मध्यम आय का जाल ऐसी स्थिति है, जहां एक मध्यम आय वाला देश बनने के बाद आर्थिक वृद्धि स्थिर हो जाती है और वह उच्च आय वाला देश नहीं बन पाता है।

विभिन्न क्षेत्रों में संसाधनों के सही आवंटन, मजबूत सुधारों और उच्च वृद्धि दर के साथ भारत अपनी वैश्विक आर्थिक हिस्सेदारी में उल्लेखनीय बढ़त दर्ज कर सकता है। उन्होंने कहा, राजनीतिक स्थिरता, व्यापक आर्थिक स्थिरता और एक बड़ा घरेलू बाजार भारत की प्रमुख ताकतें।

Hindustan Page

भारत-यूरोपीय संघ के व्यापार मंत्रियों ने दिए निर्देश

एफटीए वार्ता में तेजी लाएं, लंबित मुद्दों को जल्द सुलझाएं

नई दिल्ली, 10 जनवरी (भाषा)।

भारत और यूरोपीय संघ के व्यापार मंत्रियों ने अधिकारियों को प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) को अंतिम रूप देने के लिए वार्ता में तेजी लाने और लंबित मुद्दों को जल्द सुलझाने का निर्देश दिया है। एक आधिकारिक बयान में शनिवार को यह जानकारी दी गई।

वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और यूरोपीय संघ (ईयू) के व्यापार एवं आर्थिक सुरक्षा आयुक्त मारोस सेफकोविच ने ब्रुसेल्स में मुलाकात की और बातचीत की प्रगति का जायजा लिया। गोयल की दो दिवसीय यात्रा नौ जनवरी को पूरी हुई। वाणिज्य मंत्रालय ने कहा, दोनों नेताओं ने बातचीत करने वाले दलों से लंबित मुद्दों को हल करने और समझौते में तेजी लाने के लिए कहा। बैठक मुख्य रूप से वस्तुओं के लिए बाजार पहुंच, मूल स्थान के नियम और सेवाओं सहित विभिन्न वार्ता क्षेत्रों में हासिल की गई प्रगति की समीक्षा पर केंद्रित थी। मंत्री स्तर की इस मुलाकात से पहले 6-7 जनवरी 2026 को वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल और यूरोपीय आयोग की व्यापार महानिदेशक सबाइन वेयैंड के बीच उच्च स्तरीय चर्चा हुई थी। मंत्रालय ने कहा कि अधिकारियों ने मतभेदों को कम करने और बकाया मुद्दों पर स्पष्टता सुनिश्चित करने के लिए काम किया, जिससे मंत्री स्तर की वार्ता का रास्ता साफ हो गया।

वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और यूरोपीय संघ (ईयू) के व्यापार एवं आर्थिक सुरक्षा आयुक्त मारोस सेफकोविच ने ब्रुसेल्स में मुलाकात की और बातचीत की प्रगति का जायजा लिया।

2025 में रिकार्ड के करीब रहा चावल निर्यात

रायपुर, रायटर: प्रतिबंध हटने का भारत के चावल निर्यात पर सकारात्मक असर रहा है और इससे 2025 के दौरान भारत का चावल निर्यात रिकार्ड स्तर के करीब रहा है। सरकार अधिकारियों और उद्योग से जुड़े लोगों के अनुसार, भारत के चावल निर्यात में पिछले वर्ष 19.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो कि रिकार्ड में दूसरा सबसे उच्चतम स्तर है।

नाम ने प्रकाशित करने की शर्त पर एक सरकारी अधिकारी ने बताया कि सरकार की ओर से मार्च में प्रतिबंध हटाने के बाद भारतीय निर्यात तेजी से शुरू हुआ। रिकार्ड उत्पादन के साथ आपूर्ति में सुधार के चलते भारत ने 2022 और 2023 में लगाए गए अंतिम निर्यात प्रतिबंध हटा दिए।

अधिकारी ने कहा कि 2024 में 1.80 करोड़ टन के मुकाबले 2025 में भारत का चावल निर्यात 2.15 करोड़ टन रहा है। यह 2022 के रिकार्ड 2.23 करोड़ टन के करीब है। पिछले वर्ष गैर-बासमती चावल का निर्यात 25 प्रतिशत बढ़कर 1.51 करोड़ टन रहा है, जबकि बासमती निर्यात आठ प्रतिशत बढ़कर रिकार्ड 64 लाख टन रहा है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा चावल निर्यातक है और बेहतर आपूर्ति के चलते इसने थाईलैंड और वियतनाम जैसे प्रतिद्वंद्वियों के निर्यात को सीमित कर दिया है। इसी का नतीजा है कि एशिया में चावल की कीमतें लगभग एक दशक में सबसे निचले स्तर पर पहुंच गईं और अफ्रीका व अन्य क्षेत्रों में गरीब उपभोक्ताओं के लिए लागत कम हुई।

- प्रतिबंध हटने के कारण पिछले वर्ष भारत का चावल निर्यात 2.15 करोड़ टन रहा
- गैर-बासमती चावल निर्यात 25 प्रतिशत बढ़कर 1.51 करोड़ टन रहा

इन देशों के लिए बढ़ा भारत का गैर-बासमती चावल निर्यात

एक अन्य सरकारी अधिकारी ने बताया कि पिछले वर्ष भारत के गैर-बासमती चावल का निर्यात बांग्लादेश, बेनिन, कैमरून, आइवरी कोस्ट और जिबूती के लिए तेजी से बढ़ा है। वहीं, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात और ब्रिटेन ने वर्ष के दौरान प्रीमियम बासमती चावल की खरीद बढ़ाई। भारत आमतौर पर थाईलैंड, वियतनाम और पाकिस्तान के कुल निर्यात से अधिक चावल का निर्यात करता है।

देश को हर तरह से मजबूत बनाकर इतिहास का प्रतिशोध लेंगे : डोभाल

नई दिल्ली, प्रेट्र : राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने शनिवार को कहा कि भारत को न केवल सीमाओं पर, बल्कि हर तरह से खुद को मजबूत करना होगा, ताकि हमलों और पराधीनता के दर्दनाक इतिहास का प्रतिशोध लिया जा सके। 'विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद' के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए डोभाल ने महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस और भगत सिंह जैसे स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्षों और बलिदानों का उल्लेख किया।

खुफिया ब्यूरो के पूर्व निदेशक ने देशभर से आए तीन हजार युवा प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा- आप भाग्यशाली हैं कि आपका जन्म स्वतंत्र भारत में हुआ। मेरा जन्म गुलाम भारत में हुआ था। हमारे पूर्वजों ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया और अनगिनत कठिनाइयों का सामना किया। भगत सिंह जैसे लोगों को फांसी दी गई, सुभाष चंद्र बोस ने जीवनभर संघर्ष किया और महात्मा गांधी को हमारे लिए सत्याग्रह करना पड़ा, तब जाकर हमें स्वतंत्रता मिली।

एनएसए ने कहा कि प्रतिशोध शब्द अच्छा तो नहीं है, लेकिन यह अपने आप में बड़ी शक्ति हो सकती है। हमें अपने इतिहास का प्रतिशोध लेना है और देश को फिर उस मुकाम पर ले जाना है, जहां यह न केवल सीमा सुरक्षा के मामले में, बल्कि अर्थव्यवस्था, सामाजिक विकास...हर पहलू में फिर से महान बने। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को भविष्य का नेता बताते हुए डोभाल ने मजबूत नेतृत्व की आवश्यकता पर जोर दिया, जैसा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रदर्शित किया है। उन्होंने कहा-नेपोलियन ने एक बार कहा था कि मैं एक भेड़ के नेतृत्व में 1000 शेरों से नहीं डरता, लेकिन एक शेर के नेतृत्व में 1000 भेड़ों से डरता हूं। नेतृत्व इतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि हम एक प्रगतिशील समाज थे। हमने अन्य सभ्यताओं या उनके मंदिरों पर हमला नहीं किया, लेकिन सुरक्षा के मामले में हम जागरूक नहीं थे। इसलिए इतिहास ने हमें सबक सिखाया। क्या हमने वह सबक सीखा? यह महत्वपूर्ण है कि हम उस सबक को याद रखें, क्योंकि अगर युवा इसे भूल जाते हैं, तो यह देश के लिए दुखद होगा। दुनिया में हर संघर्ष सुरक्षा संबंधी चिंताओं से ही जन्म लेता है। संघर्ष क्यों होता है? ऐसा नहीं है कि लोग मनोरोगी हैं और लाशें देखकर आनंद लेते हैं। बल्कि, ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आप अपनी सुरक्षा के लिए दुश्मन देश को अपने अधीन करना चाहते हैं और उसे अपनी शर्तें मानने के लिए मजबूर करना चाहते हैं। दुनिया में अभी जो भी संघर्ष चल रहा है, उसे देखिए। यह सुरक्षा के लिए दूसरे देश पर अपनी शर्तें थोपने के बारे में ही है। इसलिए हमें भी अपनी रक्षा करनी होगी।

- कहा-प्रतिशोध अच्छा शब्द तो नहीं, लेकिन अपने आप में यह हो सकती है बड़ी शक्ति
- 'विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद' के उद्घाटन समारोह को किया संबोधित

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोवाल शनिवार को नई दिल्ली में विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद को संबोधित करते हुए। एएनआइ

विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में युवा ही मुख्य प्रेरक शक्ति : राजनाथ सिंह

नई दिल्ली, प्रेट्र : रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को कहा कि भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में युवा ही मुख्य प्रेरक शक्ति हैं। उन्होंने युवाओं से बहुविषयक शिक्षा को अपनाने का आह्वान किया ताकि वे तेजी से हो रहे तकनीकी विकास, विशेष रूप से एआइ, क्वांटम कंप्यूटिंग और अंतरिक्ष अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में प्रगति के साथ तालमेल बनाए रख सकें।

राजनाथ ने ये बातें उत्तर प्रदेश के 78 युवाओं के साथ बातचीत के दौरान कहीं, जो राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित 'विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद' में भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा, सीखने की प्रक्रिया कभी खत्म नहीं होती। आपको नवीनतम पद्धतियों से, अपनी गलतियों से और सबसे महत्वपूर्ण, दूसरों के अनुभवों से सीखना चाहिए। बड़े सपने देखें, लेकिन उन्हें बोझ न बनने दें।

उन्होंने चुनौतियों को जीवन का अपवाद नहीं, बल्कि उसका स्वाभाविक हिस्सा बताते हुए इस बात पर जोर दिया कि कठिन समय ही व्यक्ति के सच्चे आंतरिक स्वरूप और चरित्र को उजागर करता है। आलोचना व असफलता व्यक्ति की क्षमता की परीक्षा लेती हैं और भविष्य की दिशा तय करती है।

राजनाथ सिंह।

रक्षा मंत्री ने तालमेल बनाए रखने के लिए बहुविषयक शिक्षा को अपनाने का किया आह्वान

Dainik Jagaran Page

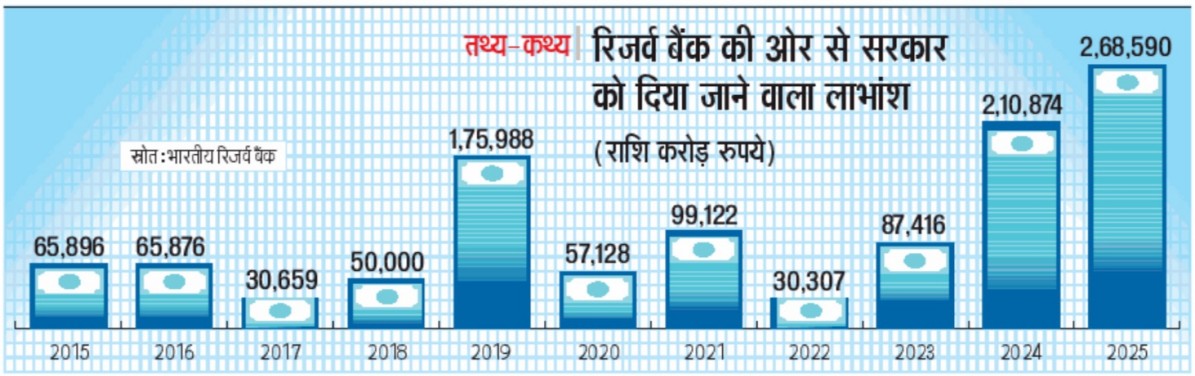

सेना प्रमुख बोले: ऑपरेशन सिंदूर के बाद पड़ोसी देश ने सीडीएफ और स्ट्रेटजी कमांड बनाई

पाकिस्तान को बदलना पड़ा संविधान

पुणे, एजेंसी। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने कहा है कि 'ऑपरेशन सिंदूर' की वजह से पाकिस्तान को जल्दबाजी में संविधान में बदलाव करने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह इस बात का सबूत है कि इस ऑपरेशन के दौरान पाक के लिए चीजें ठीक नहीं रहीं।

सीडीएस ने पुणे पब्लिक पॉलिसी फेस्टिवल को संबोधित करते हुए कहा कि पाकिस्तान में ये संशोधन ऊपर से तो प्रशासनिक या कानूनी (जैसे सीमा शुल्क अदालतें) लग सकते हैं, लेकिन असली मकसद सेना की शक्ति को पूरी तरह से बदलना और केंद्रित करना है।

चौहान ने कहा कि पाक ने 'चेयरमैन जॉइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ' की जगह 'चीफ ऑफ डिफेंस फोर्सेस' का पद बनाया। अब पाकिस्तान का सेना प्रमुख ही यह तय करेगा कि सीडीएफ कौन बनेगा। इसका मतलब है कि उन्होंने सारी ताकत सेना प्रमुख को दे दी है। यह बड़ा बदलाव है।

सीडीएस ने बताया कि पाकिस्तान ने दूसरा बड़ा बदलाव नेशनल स्ट्रेटजी कमांड के गठन का किया। इससे पहले उन्होंने आर्मी रॉकेट फोर्सेज कमांड भी बनाई थी। पारंपरिक, रणनीतिक दृष्टिकोण से यह उनकी क्षमताएं मजबूत कर सकता है। उन्होंने मूल रूप से नई संरचनाओं को बनाकर ताकत को केंद्रित किया है।

पुणे में शनिवार को अफसरों को संबोधित करते सीडीएस अनिल चौहान। • एजेंसी

एक व्यक्ति को सौंपी शक्ति

सीडीएस अनिल चौहान ने कहा कि पाकिस्तान ने अपनी सारी सैन्य शक्ति एक ही व्यक्ति (सेना प्रमुख) के हाथों में सौंप दी है। सीडीएफ के जरिए सेना प्रमुख जमीनी ऑपरेशंस, नेवी और एयरफोर्स के साथ संयुक्त ऑपरेशन, साथ ही रणनीतिक और न्यूक्लियर मामलों के लिए जिम्मेदार होंगे। ये बदलाव दिखाते हैं कि उनकी सोच अभी भी सिर्फ 'जमीन की लड़ाई' तक सीमित है। जो लोग 'स्ट्रेटेजिक फोर्सेज' का मतलब नहीं समझते, उनके लिए इसका मतलब न्यूक्लियर हथियार हैं।

07 मई 2025 को पाक के खिलाफ भारत ने चलाया था ऑपरेशन सिंदूर

ऑपरेशन सिर्फ रुका है, खत्म नहीं हुआ

सीडीएस जनरल चौहान ने कहा कि पाकिस्तान के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर केवल रुका है, खत्म नहीं हुआ। पाकिस्तान दोबारा हिमाकत करेगा तो फिर कार्रवाई होगी।

भारत की थिएटर कमांड का काम अंतिम चरण में

प्रस्तावित संयुक्त थिएटर कमांड की प्रगति पर चर्चा करते हुए सीडीएस चौहान ने कहा कि केंद्र सरकार ने इस अभ्यास को 30 मई तक पूरा करने के लिए समय सीमा तय की है। हालांकि, सशस्त्र बल समय सीमा से काफी पहले संरचना को लागू करने के लिए काम कर रहे हैं। भारत ने उरी सर्जिकल स्ट्राइक, बालाकोट एयर स्ट्राइक, डोकलाम और गलवान जैसी घटनाओं से बहुत कुछ सीखा है। अब भारत एक ऐसा स्थायी सिस्टम बना रहा है जो अचानक आने वाली मुसीबत से निपटने में सक्षम हो।

देश को हर मोर्चे पर सशक्त बनाना जरूरी: डोभाल

नई दिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने शनिवार को कहा कि युवाओं के भीतर राष्ट्र निर्माण की 'आग' के बिना भारत महान नहीं बन सकता। उन्होंने जोर दिया कि देश को सुरक्षा, अर्थव्यवस्था और तकनीक के हर मोर्चे पर सशक्त बनाना समय की जरूरत है।

'विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद' के उद्घाटन समारोह में डोभाल ने स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्षों, भारत की सभ्यता पर हुए हमलों और मजबूत नेतृत्व के महत्व का जिक्र किया। उन्होंने युवाओं से कहा, मैं गुलाम भारत में पैदा हुआ। आप भाग्यशाली हैं कि स्वतंत्र भारत में पैदा हुए। सदियों तक हमारे पूर्वजों ने इसके लिए बहुत कुर्बानियां और अपमान सहे हैं। हमारे गांव जले, हमारी सभ्यता को समाप्त किया गया, हमारे मंदिरों को लूटा गया और हम मूकदर्शक की तरह देखते रहे। यह इतिहास हमें एक चुनौती देता है कि भारत के हर युवक के अंदर 'आग' होनी चाहिए।

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने विकसित भारत युवा संवाद को संबोधित किया

एनएसए ने कहा, जंग इसलिए लड़ी जाती हैं, ताकि दुश्मन के मनोबल को कमजोर किया जा सके और उसे अपनी शर्तों पर संधि के लिए मजबूर किया जा सके। दुनिया में इस समय कोई भी लड़ाई इसलिए हो रही है, ताकि सुरक्षा के लिए दूसरे देश को अपनी शर्तें मानने पर मजबूर किया जा सके।

Hindustan Page

संडे बिग इन्फो • दुनिया में असमानता

56 हजार लोगों के पास आधी दुनिया से 3 गुना ज्यादा दौलत

नई दिल्ली | दुनिया अमीर हो रही है, लेकिन बराबरी से नहीं। शीर्ष 10% आबादी के पास दुनिया की 75% दौलत है। वहीं, निचले पायदान पर अटके 50% लोगों के पास महज 2% संपत्ति है। शीर्ष 10% लोगों की जेब में 53% आमदनी जाती है। असमानता की खाई जलवायु और शिक्षा में भी बढ़ रही है।

आधी आबादी... सिर्फ 8% आय में ही खर्च चलाने पर है मजबूर

1995 से 2025 तक अमीरों की आमदनी में 3% की वृद्धि हुई। वहीं, 50% गरीबों की आय 2% घट गई।

वैश्विक आमदनी में हिस्सेदारी

दौलत: शीर्ष 10% के पास 75% दौलत, आधी दुनिया के पास 2%

आय की तुलना में दौलत ज्यादा केंद्रित है। 2025 में दुनिया की संपत्ति का बड़ा हिस्सा शीर्ष पर है।

वैश्विक दौलत में हिस्सेदारी

10% लोग, जो शीर्ष पर हैं, वे बाकी 90% से ज्यादा कमाते हैं

01% शीर्ष लोगों की कमाई निचली आधी आबादी से 2.5 गुना ज्यादा है।

निचले 50% = **280** करोड़ वयस्क

शीर्ष 10% = **55.6** करोड़ वयस्क

शीर्ष 0.001% (करीब 56 हजार लोग) के पास आधी आबादी से 3 गुना ज्यादा दौलत

- **शीर्ष 0.001% की** हिस्सेदारी: 1995 में 3.8% थी, जो 2025 में 6.1% हो गई।
- **निचले 50%** की हिस्सेदारी 2000 के बाद से 2% पर ठहरी है, 1% के पास 37% दौलत है।

जलवायु: शीर्ष 10% पूंजी वाले दुनिया के 77% उत्सर्जन के जिम्मेदार

जलवायु संकट सबका है, पर जिम्मेदारी बराबर नहीं। शीर्ष 1% अकेले 41% स्वामित्व-आधारित उत्सर्जन करते हैं।

अवसर: शिक्षा पर होने वाले खर्च में भी 1 बनाम 41 का अंतर

आय का अंतर जितना दिखता है, अवसर की खाई उससे भी बड़ी है। शिक्षा खर्च दुनिया में असमान है।

- **प्रति बच्चे सरकारी शिक्षा खर्च**

जोखिम: नीतियों पर अमीरों का असर संभव, खाई और गहरी होगी

दुनिया की 75% दौलत शीर्ष 10% के पास-निचले व मध्यम वर्ग के लिए 'संपत्ति का अंतर' बढ़ता जाएगा।

56,000 लोग आधी दुनिया से 3 गुना ज्यादा दौलत रखते हैं। ऐसे में नीतियों पर अमीरों का असर बढ़ सकता है।

- नीति में पूंजी आधारित जिम्मेदारी नहीं जुड़ी तो असमानता तेज होगी।
- शिक्षा खर्च की 1:41 खाई आने वाली पीढ़ियों में अवसरों का अंतर स्थायी बना सकती है।

स्रोत: विश्व असमानता रिपोर्ट, 2026

INTERNATIONAL

भारत और अमेरिका के लिए आगे अपार अवसर : सर्जियो

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 10 जनवरी।

भारत और अमेरिका के रिश्तों में तनाव के बीच राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के करीबी माने जाने वाले नामित अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर नई दिल्ली पहुंच गए हैं। गोर (38) ने नवंबर के मध्य में भारत में अमेरिकी राजदूत के रूप में शपथ ली। शुक्रवार रात नई दिल्ली पहुंचने के बाद उन्होंने सोशल मीडिया पर कहा, 'भारत में आकर बहुत अच्छा लग रहा है। हमारे दोनों देशों के लिए आगे अपार अवसर हैं।' भारत में उनका आगमन ऐसे समय हुआ है जब अमेरिकी वाणिज्य मंत्री हावर्ड लटनिक के एक दावे के बाद दोनों पक्षों के बीच नया विवाद खड़ा हो गया है।

लटनिक ने कहा था कि दोनों देशों के बीच प्रस्तावित व्यापार समझौता पिछले साल इसलिए नहीं हो सका, क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को फोन नहीं किया। भारत ने शुक्रवार को इस दावे को खारिज कर दिया और लटनिक की टिप्पणियों को गलत बताया। गोर 'वाइट हाउस' के कार्मिक निदेशक के रूप में कार्यरत थे, जब राष्ट्रपति ट्रंप ने अगस्त में उन्हें भारत में अगले अमेरिकी राजदूत के रूप में नामित किया था। ट्रंप द्वारा भारतीय वस्तुओं पर शुल्क (टैरिफ) को दोगुना करके 50 फीसद करने के बाद दोनों देशों के बीच संबंध गंभीर तनाव में है। शुल्क के अलावा, कई अन्य मुद्दों पर भी संबंधों में गिरावट आई है, जिनमें पिछले साल मई में ट्रंप द्वारा भारत-पाकिस्तान संघर्ष को समाप्त करने का दावा और अमेरिका की नई आव्रजन नीति शामिल है।

अमेरिकी सीनेट ने अक्तूबर में गोर को भारत में अमेरिका के अगले राजदूत के रूप में नियुक्त करने की मंजूरी दी। गोर ने अपनी नई भूमिका को अपने जीवन का सबसे बड़ा सम्मान बताया था और कहा था कि वह अमेरिका और भारत के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने 2024 के राष्ट्रपति चुनाव से पहले ट्रंप के प्रचार अभियान की राजनीतिक कार्रवाई समिति (पीएसी) में एक प्रमुख भूमिका निभाई, और नए प्रशासन में राजनीतिक नियुक्तियों की जांच का काम सौंपे जाने के बाद उनका प्रभाव कई गुना बढ़ गया।

पिछले साल जनवरी में भारत में तत्कालीन अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी ने पद से इस्तीफा दे दिया, जिससे ट्रंप प्रशासन के लिए अपना नया राजदूत नियुक्त करने का मार्ग प्रशस्त हो गया। सीनेट से मंजूरी के कुछ दिनों बाद गोर ने अक्टूबर में छह दिनों के लिए भारत का दौरा किया था।

गोर के शपथ ग्रहण समारोह के बाद ट्रंप ने कहा था, 'मुझे सर्जियो गोर पर भरोसा है कि वह हमारे देश के सबसे महत्त्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संबंधों में से एक, यानी भारत के साथ रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने में मदद करेंगे।'

ट्रंप ने वेनेजुएला के प्रतिबंधित पांच करोड़ बैरल तेल की बिक्री अपने नियंत्रण में लिया

अमेरिका ने वेनेजुएला से तेल ले जा रहे टैंकरों को जब्त कर लिया है और अमेरिका पहले से प्रतिबंधित तीन करोड़ से पांच करोड़ बैरल वेनेजुएला के तेल की बिक्री अपने नियंत्रण में ले रहा है तथा भविष्य में भी दुनियाभर में इसकी बिक्री को नियंत्रित करेगा। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार को तेल कंपनियों के अधिकारियों से वेनेजुएला में जल्द से जल्द वापस लौटने का आ''ान किया। 'वाइट हाउस' (अमेरिका के राष्ट्रपति का आधिकारिक आवास एवं कार्यालय) देश के विशाल पेट्रोलियम भंडार का पूरी तरह से दोहन करने की क्षमता को बहाल करने के लिए 100 अरब अमेरिकी डालर के निवेश को तेजी से सुरक्षित करने की कोशिश कर रहा है। वेनेजुएला के अपदस्थ राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को पकड़ने के लिए शनिवार को अमेरिकी सैन्य कार्रवाई के बाद से ट्रंप ने तुरंत इस कदम को अमेरिका के लिए एक नए आर्थिक अवसर के रूप में प्रस्तुत करना शुरू कर दिया है। ट्रंप ने तेल उद्योग के अधिकारियों के साथ बैठक शुरू करते हुए उन्हें आश्वस्त करने की कोशिश की कि उन्हें दक्षिण अमेरिकी देश में तेजी से निवेश करने और कुछ मामलों में वहां लौटने के बारे में संशय करने की आवश्यकता नहीं है। मादुरो के अपदस्थ होने के बाद से अमेरिका द्वारा लगाए गए प्रतिबंध और मौजूदा राजनीतिक हालातों के कारण अनिश्चितता बनी हुई है।

ट्रंप बोले – प्यार से या जबरन...हम ग्रीनलैंड लेकर रहेंगे

न्यूयार्क टाइम्स से

- अमेरिकी राष्ट्रपति ने फिर दी डेनमार्क के नियंत्रण वाले ग्रीनलैंड पर कब्जे की धमकी
- कहा-अगर हम यह काम नहीं करेंगे, तो रूस या चीन ग्रीनलैंड पर कब्जा कर लेगा
- वेनेजुएला पर तेल कंपनी के अधिकारियों के साथ बैठक के दौरान ट्रंप ने कही यह बात

वाशिंगटन : सैन्य शक्ति के मद में चूर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की दादागीरी बढ़ती ही जा रही है। वेनेजुएला के बाद अब ग्रीनलैंड के मामले में भी वह नियम आधारित विश्व व्यवस्था को धता बताने पर आमादा दिखाई दे रहे हैं। एक दिन पहले पैसे देकर ग्रीनलैंड खरीदने की बात कहने वाले ट्रंप के सुर शुक्रवार को बदल गए। उन्होंने ग्रीनलैंड को जबरन अपने कब्जे में लेने की धमकी दी और कहा कि वह इस मुद्दे पर कुछ न कुछ करेंगे। चाहे उसे पसंद हो या न हो। अगर हम ऐसा नहीं करते हैं, तो रूस या चीन ग्रीनलैंड पर कब्जा कर लेगा। हम रूस या चीन को पड़ोसी के रूप में नहीं रखना चाहेंगे। मैं प्यार से समझौता करना चाहता हूं। लेकिन अगर यह प्यार से नहीं हुआ, तो हमें जबरन यह काम करना पड़ेगा।

व्हाइट हाउस में शुक्रवार को तेल कंपनियों के अधिकारियों के साथ बैठक के दौरान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप। एपी

ग्रीनलैंड ने ट्रंप के प्रस्ताव को खारिज किया

एपी के अनुसार, ग्रीनलैंड ने राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा अमेरिका के नियंत्रण के लिए बार-बार किए जा रहे आह्वान को खारिज किया है। ग्रीनलैंड के प्रधानमंत्री जेन्स-फ्रेडरिक नीलसन और चार पार्टी नेताओं ने कहा कि हम अमेरिकी नहीं बनना चाहते, हम डेनिश नहीं बनना चाहते।

व्हाइट हाउस में आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने तेल कंपनी के अधिकारियों के साथ वेनेजुएला के विशाल तेल भंडारों का दोहन करने की अपनी योजनाओं पर चर्चा की। इस दौरान ट्रंप ने अमेरिकी विदेश नीति का साम्राज्यवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा-अगर हम ऐसा नहीं करते हैं, तो रूस या चीन ग्रीनलैंड पर कब्जा कर लेगा। ट्रंप ने झूठा दावा किया कि डेनमार्क का अर्ध-स्वायत्त क्षेत्र ग्रीनलैंड चीनी और रूसी युद्धपोतों से घिरा हुआ है। वास्तव में रूस और चीन आर्कटिक क्षेत्र में सक्रिय तो हैं, लेकिन ग्रीनलैंड उनके जहाजों से घिरा हुआ नहीं है। दूसरी तरफ अमेरिका का ग्रीनलैंड में एक सैन्य अड्डा है।

ट्रंप ने कहा कि डेनमार्क ग्रीनलैंड पर केवल इसलिए दावा करता है, क्योंकि 500 साल पहले उसकी एक नाव वहां उतरी थी। इसका मतलब यह नहीं है कि वह उस भूमि का मालिक है। विशेषज्ञों का कहना है कि अमेरिका द्वारा बलपूर्वक ग्रीनलैंड पर कब्जा करने से नाटो के मूल समझौते का उल्लंघन होगा, जिसके संस्थापक सदस्य डेनमार्क और अमेरिका दोनों हैं। इस संधि के तहत किसी भी सदस्य देश पर हमला सभी सदस्यों पर हमला माना जाता है। लेकिन, ट्रंप ने सैन्य गठबंधन के इस मूल सिद्धांत को खारिज कर दिया और कहा कि वह द्वीप की रक्षा तभी करेंगे, जब अमेरिका सीधे तौर पर इस क्षेत्र का शासन संभालेगा।

चीन को अमेरिकी बाजार से ही खरीदना पड़ेगा तेल : ट्रंप

वाशिंगटन, आइएएनएस : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि चीन को सिर्फ अमेरिका या वाशिंगटन द्वारा नियंत्रित बाजारों से ही तेल खरीदने की अनुमति होगी। उन्होंने इस कदम को वैश्विक ऊर्जा प्रवाह पर अमेरिकी प्रभाव को मजबूत करने के व्यापक प्रयास का हिस्सा बताया। कहा कि बीजिंग अब स्वतंत्र रूप से वेनेजुएला से तेल नहीं खरीद पाएगा। और उसे अमेरिका द्वारा अनुमोदित चैनलों के माध्यम से ही तेल खरीदना होगा। यह नीति अमेरिकी समझौतों के तहत उत्पादित तेल और अमेरिका से होने वाली आपूर्ति दोनों पर लागू होती है।

अमेरिकी धमकी के बीच चीन, रूस और ईरान का दक्षिण अफ्रीका में सैन्य अभ्यास

यह ऐसे समय हो रहा है, जब ट्रंप और कई ब्रिक्स देशों के बीच तनाव बढ़ गया है

ट्रंप ने ब्रिक्स देशों पर अमेरिका विरोधी नीतियां अपनाने का आरोप लगाया है

जोहानिसबर्ग, रायटर: अमेरिका की ओर से वेनेजुएला में कार्रवाई और अन्य देशों को दी जा रही धमकी के बीच चीन, रूस और ईरान ने शनिवार को दक्षिण अफ्रीका के जल क्षेत्र में संयुक्त नौसैनिक अभ्यास शुरू किया। यह ब्रिक्स पल्स नौसैनिक अभ्यास एक सप्ताह चलेगा। यह ऐसे समय हो रहा है, जब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की प्रशासन और कई ब्रिक्स प्लस देशों, जिसमें चीन, ईरान, दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील शामिल हैं, के बीच तनाव बढ़ गया है।

दक्षिण अफ्रीका की सेना ने कहा, "विल फार पीस 2026 अभ्यास में ब्रिक्स प्लस देशों की नौसेनाएं संयुक्त समुद्री सुरक्षा अभियानों और अंतर-संचालनीयता अभ्यासों के लिए एक साथ आ रही हैं।" संयुक्त अभियानों के कार्यवाहक प्रवक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल म्फो माथेबुला ने बताया कि सभी सदस्यों को आमंत्रित किया गया था। ट्रंप ने ब्रिक्स देशों पर अमेरिका विरोधी नीतियां अपनाने का आरोप लगाया है, और पिछले जनवरी में उन्होंने सभी सदस्यों को उन शुल्कों के अतिरिक्त 10 प्रतिशत व्यापार शुल्क लगाने की धमकी दी थी जो वह पहले से ही दुनिया भर के देशों पर लगा रहे थे। माथेबुला ने इस आलोचना को खारिज कर दिया। उन्होंने बताया, "अमेरिका के प्रति कोई शत्रुता नहीं है। दक्षिण अफ्रीका ने समय-समय पर अमेरिकी नौसेना के साथ अभ्यास किया है। यह एक नौसैनिक अभ्यास है। इसका उद्देश्य हमारी क्षमताओं को बढ़ाना और जानकारी साझा करना है।"

दक्षिण अफ्रीका के जल क्षेत्र में संयुक्त नौसैनिक अभ्यास के दौरान साइमन टाउन बंदरगाह पर खड़ा ईरानी कार्वेट आइआरआइएस नघदी। एएफपी

पाक और अमेरिका ने शुरू किया आतंक रोधी अभ्यास

कराची, प्रेट्र: आतंकवाद से निपटने में आपसी तालमेल, रणनीति व संचालन क्षमता मजबूत करने के उद्देश्य से पाक व अमेरिका ने संयुक्त अभ्यास शुरू किया है। दोनों देशों की सेनाएं दो हफ्ते चलने वाले इस अभ्यास में आतंक-रोधी अभियानों से जुड़े अनुभव साझा करेंगी और संयुक्त अभियान की तैयारी को धार देंगी।

पाक सेना की मीडिया विंग के अनुसार, पाक-अमेरिका का 13वां द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास 'इंस्पायर्ड गैम्बिट-2026' शुक्रवार को पंजाब के खारियन जिले के पब्बी कस्बे स्थित राष्ट्रीय आतंकवाद निरोधक केंद्र में शुरू हुआ। यह अभ्यास काउंटर टेररिज्म डोमेन में आयोजित किया जा रहा है, जिसमें दोनों देशों की सेनाओं के दस्ते हिस्सा ले रहे हैं। इसका उद्देश्य आतंकवाद-रोधी अभियानों से जुड़ी रणनीति, तकनीक और प्रक्रियाओं को और प्रभावी बनाना है।

कूटनीति

अमेरिका से तनातनी के बीच ब्रिक्स को आगे बढ़ाएगा भारत

इस वर्ष ब्रिक्स की कमान भारत के पास, 13 जनवरी को जयशंकर ब्रिक्स की आधिकारिक वेबसाइट और लोगो लांच करेंगे, 10 देशों का यह संगठन अब पहले के मुकाबले है ज्यादा महत्वपूर्ण, भारत तय करने जा रहा एजेंडा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

इसे बदलते वैश्विक समीकरण के संकेत के तौर पर देखना तो जल्दबाजी होगी, लेकिन विधिवत घोषणा के बावजूद वर्ष 2025 में क्वाड संगठन (अमेरिका, भारत, जापान व आस्ट्रेलिया) की बैठक भारत में नहीं हो सकी लेकिन भारत सरकार के स्तर पर वर्ष 2026 में होने वाली ब्रिक्स संगठन की शीर्षस्तरीय बैठक की तैयारी शुरू हो चुकी है। अगले मंगलवार यानी 13 जनवरी को नई दिल्ली में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में विदेश मंत्री एस जयशंकर ब्रिक्स की आधिकारिक वेबसाइट और लोगो लांच करेंगे। अमेरिका से तनातनी के बीच विदेश मंत्री यह भी बताएंगे कि इस साल अपनी अगुआई में भारत ब्रिक्स संगठन के तहत क्या एजेंडा सेट करने जा रहा है। यह सब तब हो रहा है जब अमेरिका ब्रिक्स देशों पर लगातार निशाना साध रहा है तो दूसरी तरफ रूस, चीन तथा ईरान ने 'ब्रिक्स प्लस' संगठन के तहत दक्षिण अफ्रीका के पास समुद्र में संयुक्त नौसैनिक अभ्यास शुरू किया है। हालांकि भारत इसमें हिस्सा नहीं ले रहा है।

ब्रिक्स के उलट क्वाड सम्मेलन को लेकर कोई सूचना नहीं है। पिछले वर्ष जनवरी और जुलाई में अमेरिका में ही चारों सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक हुई थी। इस बीच फरवरी, 2025 में जब पीएम नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की मुलाकात हुई तो शीर्ष स्तरीय बैठक भारत में किए जाने पर चर्चा हुई। पहले बताया गया कि सितंबर, 2025 में यह बैठक नई दिल्ली में हो सकती है, लेकिन किसी भी सदस्य देश ने इस बारे में कुछ नहीं कहा।

एस. जयशंकर। फाइल

ब्रिक्स देशों को लेकर गलत बयानबाजी करते रहे हैं ट्रंप

क्वाड की गतिविधियों को लेकर जारी अनिश्चितता का एक बड़ा कारण ट्रंप प्रशासन का रवैया भी है जो सभी सदस्य देशों को कारोबारी मुद्दों पर असहज कर चुका है। ट्रंप प्रशासन ने जापान व आस्ट्रेलिया के साथ कारोबारी मुद्दों को फिलहाल सुलझा लिया है लेकिन भारत के साथ विवाद जारी है। राष्ट्रपति ट्रंप कई बार ब्रिक्स देशों को लेकर गलत बयानबाजी करते रहे हैं। वर्ष 2025 में जब पीएम मोदी ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए ब्राजील गए थे, उसी समय ट्रंप ने घोषणा की थी कि सभी ब्रिक्स देशों को अलग से 10 प्रतिशत का टैक्स देना पड़ेगा। वह ब्रिक्स देशों पर डालर को अंतरराष्ट्रीय बाजार से अलग करने की साजिश रचने का भी आरोप लगा चुके हैं।

भारत ब्रिक्स देशों के बीच स्थानीय मुद्रा में कारोबार का समर्थक

विदेश मंत्रालय के अधिकारियों का कहना है कि ब्रिक्स में दुनिया के 10 प्रमुख देश अब सदस्य हैं। भारत की नीति बहुकेंद्रीय वैश्विक व्यवस्था को बढ़ावा देना है और इसके तहत ही वह ब्रिक्स को समर्थन करता है। ब्रिक्स करेंसी शुरू करने या अमेरिकी डालर को बाहर करने को लेकर ट्रंप प्रशासन के बयानों को खारिज करता है लेकिन ब्रिक्स देशों के बीच स्थानीय मुद्रा में कारोबार करने की नीति का भारत समर्थन करता है।

दुनिया का सबसे बड़ा बौद्ध संस्थान, माइनस 30 डिग्री में 20 हजार लोग

सिचुआन | चीन की लारुंग घाटी में 13,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित लारुंग गार दुनिया का सबसे बड़ा बौद्ध संस्थान माना जाता है। हालिया बर्फबारी के बाद यहां तापमान माइनस 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। घाटी की पहाड़ियों की ढलान पर हजारों लकड़ी के घर एक-दूसरे से सटे हुए बने हैं। बौद्ध परंपरा में पवित्र माने जाने के कारण यहां के घरों की दीवारें और छतें लाल रंग से रंगी होती हैं। गहरे रंग होने की वजह से ये सतहें सूर्य की ऊष्मा अपेक्षाकृत अधिक अवशोषित करती हैं, जिससे ठंडे मौसम में घरों की सतहों पर ताप बना रहता है। इसके साथ ही लकड़ी की संरचना, ढलान वाली छतें, भीतरी हीटिंग और घनी बसावट मिलकर छतों पर बर्फ जमने नहीं देते। इन्हीं कारणों से पूरी घाटी बर्फ से ढकी होने के बावजूद छतें साफ दिखाई देती हैं। एक समय यहां 40,000 से अधिक भिक्षु रहते थे। फिलहाल यहां करीब 20,000 लोग निवास करते हैं।

EDITORIAL

मीडिया साक्षरता का महत्त्व

पुस्तक-संस्कृति

प्रदीप कुमार राय

देश में उत्तर प्रदेश के बाद राजस्थान में भी स्कूलों में विद्यार्थियों के लिए समाचार पत्र का पाठन अनिवार्य किया गया है। यह पहल निस्संदेह सराहनीय है और अन्य राज्यों को भी इसे अपनाना चाहिए। मगर केवल अक्षर-ज्ञान से बच्चे अखबार में प्रकाशित सामग्री को नहीं समझ पाते; समाचार और विचार का जीवन में अर्थ समझने के लिए मीडिया साक्षरता आवश्यक है। आज दुनिया के कई हिस्सों में मीडिया साक्षरता को गणित की तरह गंभीर विषय के रूप में पढ़ाने पर बल दिया जा रहा है, जबकि भारत का शैक्षिक चिंतन अभी इससे काफी दूर है। अखबार पठन की इस अच्छी शुरुआत के साथ अगर स्कूलों में मीडिया साक्षरता भी जरूरी की जाए, तभी यह पहल अपने उद्देश्य को सार्थक कर पाएगी।

पढ़ना-लिखना जानने वाला व्यक्ति वर्षों से 'साक्षर' माना जाता रहा है, लेकिन 21वीं सदी में यह मानदंड बदल चुका है। आज विश्व में व्यापक सहमति है कि वास्तविक साक्षर वही है, जो 'मीडिया साक्षर' हो। इसका प्रशिक्षण ग्रहण किए बिना कोई व्यक्ति मीडिया का सही से प्रयोग नहीं कर पाता, फिर समाज के यथार्थ को समझने की तो बात ही दूर है। सूचना सचेत लोगों के बिना एक सचेत समाज का निर्माण संभव नहीं है। देश को यह यथार्थ तत्काल याद दिलाने की जरूरत इसलिए है, क्योंकि पहली बार उत्तर प्रदेश और राजस्थान ने स्कूलों में समाचार पत्र पढ़ना अनिवार्य किया है। इससे पहले हिमाचल प्रदेश ने इसी तरह का कदम उठाया था।

वास्तविक लाभ

इस पहल की सराहना के साथ यह स्मरण करना भी जरूरी है कि भारत में मीडिया साक्षरता के अभाव में बच्चे समाचार पत्र को सही तरीके से पढ़ नहीं पाएंगे। दूसरे शब्दों में कहें, तो वे इसका वास्तविक लाभ नहीं ले पाएंगे। पाठ्यक्रमों में जितना महत्त्व गणित पढ़ाने को दिया जाता है, उतना ही महत्त्व मीडिया साक्षरता को देने पर ही सूचना सचेत समाज का सही अर्थों में निर्माण हो पाएगा। विकसित देशों में तो शिक्षकों से ज्यादा पुस्तकालय लोगों को मीडिया एवं सूचना साक्षर बनाने में योगदान देते हैं। अमरेकिन प्रेजिडेंशियल पुस्तकालय ने तो विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पूरा ढांचा तैयार करके दिया है कि समाचार को व्यवस्थित तरीके से कैसे पढ़ें और उसके लाभ-हानियों को कैसे समझें। विकासशील देशों, यहां तक कि भूटान जैसे छोटे राष्ट्र में भी मीडिया साक्षरता के महत्त्व को स्वीकारा जा रहा है।

परंपरा के अनुरूप

स्कूलों में समाचार पत्र के पाठन को अनिवार्य करने की पहल से उम्मीद जगी है कि मीडिया साक्षरता की दिशा में भी समय रहते प्रभावी कदम उठाए जाएंगे। चूंकि इस क्षेत्र में भारत पहले ही काफी पीछे है, इसलिए वैश्विक पाठ्यक्रमों को ज्यों का त्यों अपनाना संभव नहीं। हमें देश के सामाजिक अनुभव और बौद्धिक परंपरा के अनुरूप अपना पाठ्यक्रम विकसित करना होगा। साथ ही यह स्मरण रखना जरूरी है कि यह वही भारत है, जिसके पास सूचना और मीडिया साक्षरता की शिक्षण-परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है। वेदों के प्रादुर्भाव के तुरंत बाद ही मीमांसा और न्याय जैसे ग्रंथों के माध्यम से सूचना के विश्लेषण एवं तर्क की सशक्त विधियां विकसित की गईं। मीडिया और सूचना साक्षरता सिखाने के लिए भारत के पास ज्ञान की अतुल संपदा पहले से उपलब्ध है।

आधुनिक युग में तो इस विषय की शुरुआत कनाडा के ओंटारियो प्रांत ने वर्ष 1978 में की थी। शुरुआत के पीछे एक रोचक घटना है। कनाडा सरकार को लगा कि उसके युवा अमेरिका की संस्कृति के प्रभाव में रहते हैं। खोज करने पर पता चला कि यह अमेरिकी मीडिया के प्रभाव के कारण हो रहा है। विशेषज्ञों ने बताया कि वहां के लोग मीडिया साक्षर नहीं है, इसलिए ऐसा हुआ। इसके बाद शिक्षकों ने मिलकर इस विषय के लिए मजबूत पाठ्यक्रम बनाया और उसके परिणाम भी सकारात्मक रहे। युवा समझ पाए कि कैसे संदेशों को निष्क्रिय रूप से लेकर हम उनके साथ बिना सोचे बहे चले जाते हैं। उधर, यूनेस्को ने इस पर व्यापक कार्य शुरू कर दिया और पुस्तकालय विज्ञान के पहले से चल रहे सूचना साक्षरता को मीडिया साक्षरता के साथ जोड़कर सूचना सचेत समाज बनाने का खाका व्यापक कर दिया।

> **पढ़ना-लिखना जानने वाला व्यक्ति वर्षों से 'साक्षर' माना जाता रहा है, लेकिन 21वीं सदी में यह मानदंड बदल चुका है। आज विश्व में व्यापक सहमति है कि वास्तविक साक्षर वही है, जो 'मीडिया साक्षर' हो। इसका प्रशिक्षण ग्रहण किए बिना कोई व्यक्ति मीडिया का सही से प्रयोग नहीं कर पाता, फिर समाज के यथार्थ को समझने की तो बात ही दूर है।**

लोकतंत्र और समाचार माध्यम

मीडिया साक्षरता की जटिल तकनीकी अवधारणाओं में जाने से पहले कुछ मौलिक प्रश्नों को समझना अधिक आवश्यक है, क्योंकि यही मीडिया साक्षर बनने की प्रारंभिक सीढ़ियां हैं। यदि बच्चे या वयस्क को यह व्यवस्थित रूप से न बताया जाए कि एक नागरिक के लिए समाचार को सही ढंग से समझना क्यों जरूरी है, नागरिक के समाचार-बोध और लोकतंत्र के बीच क्या संबंध है, समाचार की वास्तविक संरचना क्या होती है, तो उससे सजग मीडिया प्रयोग करने की उम्मीद करना व्यर्थ है। डिजिटल माध्यमों के अनियंत्रित और अनजान स्रोतों ने तो अनेक पढ़े-लिखे लोगों को भी यह भुला दिया है कि असली समाचार कैसा होता है। इसके शिक्षण में बताया जाता है कि मीडिया काम कैसे करता है? संदेशों का निर्माण कैसे करता है? यह किस तरह संचालित होता है? समाचार व अन्य संदेशों का महत्त्व बताने के साथ उनकी सीमाएं भी बताई जाती है? फिर मीडिया संदेशों का विश्लेषण करने और उसमें पक्षपात छांटने की विधि बताई जाती है।

डिजिटल तकनीक के विस्तार और उससे भ्रामक सूचनाओं ने दुनिया को डिजिटल साक्षरता को एक अलग शाखा बनाने पर मजबूर कर दिया। इन दिनों जब कृत्रिम मेधा का बोलबाला है, तो अब इस विषय में साक्षरता के लिए सहमति बनी है। ऐसा लगता है कि अब तो सारा ध्यान कृत्रिम मेधा साक्षरता पर ही न चला जाए। मगर इसका मूल आधार मीडिया साक्षरता से ही आएगा यानी यही विषय अब कृत्रिम मेधा के छिपे अर्थ समझने में मदद करेगा। प्रारंभिक स्तर पर सभी विषयों के शिक्षक बच्चों में समाचार के माध्यम से नागरिक बोध विकसित कर सकते हैं। इसके बाद मीडिया साक्षरता के विशेषज्ञों से पाठ्यक्रम तैयार कराकर स्कूलों में प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

नई चुनौतियों के दौर में भारत

डोनाल्ड ट्रंप को अंतर्राष्ट्रीय कानूनों की भी कोई 'परवाह' नहीं। साल भर पहले तक यह सब कुछ अकल्पनीय था। हम अकल्पनीयता को असलियत बनते देखने को अभिशप्त हैं। ऐसे में, कोई यह दावा नहीं कर सकता कि ट्रंप का अगला कदम क्या होगा और उस पर दुनिया की प्रतिक्रिया कैसी होगी? बिला शक हम संघर्षों से एक महासंघर्ष की ओर खिसक रहे हैं।

आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

आजकल

शशि शेखर

'वेनेजुएला मेरी हुकूमत में है और जल्द हम ग्रीनलैंड पर कब्जा करेंगे। अमेरिका के लिए यह जरूरी है।' यह 16वीं शताब्दी के किसी तानाशाह की शेखी नहीं, बल्कि खुद को लोकतंत्र का मदीना बताने वाले अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का बयान है। वह कनाडा को भी अमेरिका का 51वां राज्य बताते हैं, तो क्या वह वहां भी फौजी दस्ते भेजेंगे? क्या यह इतना आसान है?

इन सवालों के जवाब पिछले हफ्ते की कुछ घटनाओं में छिपे हैं। पहले अन्य देशों की प्रतिक्रिया पर गौर फरमा देखिए।

वेनेजुएला पर हमले के तत्काल बाद बीजिंग ने कई अमेरिकी उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिए और उसके बैंकों ने डॉलर की जगह युआन में तिजारत करने की पेशकश बढ़ा दी। जिनपिंग की हुकूमत ने चेतावनी के अंदाज में हालात न सुधरने पर अमेरिकी कंपनियों पर बंदिशें बढ़ाने की मंशा बुलंद की, नतीजतन चीन के साथ व्यापार करने वाली कंपनियों के शेयर 'वॉल स्ट्रीट' में लड़खड़ा गए। उधर, रूस ने अपने बेहद घातक हथियारों की नई तैनाती शुरू कर दी। उसने अपनी सबसे ताकतवर परमाणु पनडुब्बी को वेनेजुएला के पास तैनात कर दिया है।

इसी बीच अमेरिका के कुछ शहरों में हैकर्स ने विद्युत, संचार और यातायात संसाधनों के साथ अस्पतालों पर हमला बोलकर उनको कुछ देर के लिए ठप कर दिया। अमेरिकी इसे चीन की करतूत बताते हैं, हालांकि बीजिंग ने इससे इनकार किया है। ध्यान दें, हैकर्स ने महज नागरिक सुविधाओं को निशाना बनाया, सैन्य संस्थान नहीं छेड़े। ऐसा इसलिए किया गया, ताकि अमेरिका को सैनिक कार्रवाई का अवसर न मिले। इसके बावजूद जो संदेश दिया जाना था, वह सही स्थान पर पहुंच गया।

सवाल उठता है कि क्या अमेरिका एक साथ इतने मोर्चों पर जूझ सकता है?

अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो से प्रस्तावित मुलाकात से पूर्व डेनिश रक्षा मंत्रालय ने एक सनसनीखेज बयान दिया। रक्षा विभाग के प्रवक्ता के अनुसार, हमने अपने सैनिकों को आदेश दिया है कि वे किसी भी आक्रामक को पहले गोली मारें, फिर सवाल पूछें। इस सबसे बेखबर ट्रंप प्रशासन ग्रीनलैंड वासियों को उनकी संपत्ति के एवज में भारी-भरकम रकम चुकाने की तैयारी कर रहा है। यह प्रस्ताव 'फूट डालो, राज करो' नीति का नया संस्करण है। इसके साथ-साथ पेंटागन ने मंगलवार को रूस का झंडा फहराते दो जलयानों को कब्जे में ले लिया। अमेरिका जताना चाहता है कि हमें रूसी परमाणु पनडुब्बी की कोई परवाह नहीं। वाशिंगटन में चर्चा है कि वेनेजुएला जैसा कुछ क्यूबा या कोलंबिया में हो सकता है।

यही नहीं, एक बिल के जरिये डोनाल्ड ट्रंप इस सप्ताह किसी भी देश पर 500 प्रतिशत तक शुल्क थोपने का हक हासिल कर सकते हैं। इस अधिकार का इस्तेमाल वह 'पुतिन के रक्त-पिपासु यूक्रेन अभियान' में रूसी पेट्रो पदार्थ खरीदकर 'सहयोग' देने वाले देशों के विरुद्ध करेंगे। मतलब साफ है। वह भारत, चीन और ब्राजील पर निशाना साध रहे हैं। अमेरिका ने भारत की अगुवाई वाले 'सोलर अलायंस' सहित 66 ऐसे मंचों से नाता तोड़ लिया है, जो पर्यावरण, सेहत, शिक्षा और पोषण जैसे जरूरी मसलों पर महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। ट्रंप पहले से ही संयुक्त राष्ट्र और उसके कल्याणकारी संगठनों को फिजूलखर्ची बताते आए हैं। उन्हें अंतर्राष्ट्रीय कानूनों की भी कोई 'परवाह' नहीं।

साल भर पहले तक यह सब कुछ अकल्पनीय था। हम अकल्पनीयता को असलियत बनते देखने को अभिशप्त हैं। ऐसे में, कोई यह दावा नहीं कर सकता कि ट्रंप का अगला कदम क्या होगा और उस पर दुनिया की प्रतिक्रिया कैसी होगी? बिला शक हम संघर्षों से एक महासंघर्ष की ओर खिसक रहे हैं।

क्या ट्रंप यह नहीं जानते? क्या उन्हें नहीं मालूम कि चीन ने वेनेजुएला में पिछले दो दशक में 62.5 बिलियन डॉलर का जो

निवेश किया है, उसे बचाने के लिए वह किसी भी हद तक जाएगा? इसी तरह, लातिन अमेरिका में चीन और रूस के तमाम हित अमेरिकी कार्रवाइयों से टकरा रहे हैं। इससे अनजानी गोलबंदियों को आकार मिलना शुरू हो गया है। हर गोलबंदी के साथ नई आश्वस्तियां और नए तनाव उपजते हैं।

मसलन, पिछली 6 जनवरी के पेरिस घोषणापत्र को ही ले लीजिए। यूक्रेन और यूरोपीय संघ के बीच हुए समझौते में फ्रांस, ब्रिटेन और अन्य सहयोगियों ने यूक्रेन को भविष्य में रूसी हमलों से बचाने के लिए सुरक्षा-कवच प्रदान करने की गारंटी ली है। युद्ध-विराम के बाद वे वहां न केवल अपनी सेनाएं तैनात करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, बल्कि यूक्रेन की भूमि पर सैनिक अड्डे भी बनाना चाहते हैं। इस समझौते के तहत अमेरिका इस तंत्र का नेतृत्व करेगा, लेकिन ऐसा कहते वक्त समझौते के साझीदार मुल्क जानते हैं कि उन्हें यह काम खुद करना पड़ेगा।

उम्मीद के मुताबिक, मॉस्को ने इस पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि हम यूक्रेन की धरती पर किसी भी यूरोपीय देश या नाटो की सैन्य मौजूदगी स्वीकार नहीं करेंगे। यदि ऐसा होता है, तो रूस उन पर हमला करने से भी नहीं हिचकेगा। इसके साथ ही क्रेमलिन ने समझौते की पेशकश ठुकरा दी है। हंगरी ने भी यूरोप और यूक्रेन की जुगलबंदी के खिलाफ आवाज उठाई है। मतलब साफ है कि यूक्रेन बनाम रूस का संघर्ष कभी भी पश्चिम बनाम रूस में तब्दील हो सकता है। वेनेजुएला के बाद पनपता यह दूसरा ज्वालामुखी दुनिया के लिए शुभ संकेत नहीं है।

यहां भारत की बात करना जरूरी है। हमने 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान चीन और पाकिस्तान की जुगलबंदी देखी थी, अब इसे अगले मुकाम पर पहुंचाने की तैयारी हो रही है। पाकिस्तान और बांग्लादेश के वायुसेना अध्यक्षों ने पिछले हफ्ते तय किया कि रावलपिंडी का सुरक्षा तंत्र जल्दी ही ढाका को जेएफ-17 लड़ाकू विमान के साथ आवश्यक प्रशिक्षण भी मुहैया कराएगा। बांग्लादेश में जेएफ-17 की मौजूदगी नई चुनौतियां खड़ी करती है।

आपको यहां मोहम्मद यूनुस के उस बयान की याद दिलाना चाहूंगा, जो उन्होंने बीजिंग में दिया था। उन्होंने न केवल 'चिकन नेक', बल्कि समूचे उत्तर-पूर्व को शेष भारत से काटने की बात कही थी। तय है, इन सारी खुराफातों के सूत्रधार बीजिंग में बैठे हैं। इससे उत्साहित बांग्लादेश ने भारतीय कॉटन यार्न पर 10 से 20 फीसदी का कस्टम शुल्क लगाने का इरादा जाहिर किया है। बांग्लादेश भारत का सबसे बड़ा कॉटन आयातक है।

यदि ऐसा होता है, तो अमेरिकी शुल्कों से जूझ रही हमारी अर्थव्यवस्था के लिए नया मोर्चा खुल जाएगा। यह पहला मौका है, जब बीजिंग और वाशिंगटन अलग-अलग कारणों से भारत की घेराबंदी में जुटे हुए हैं। हमारे पुराने दोस्त रूस की हालत बहुत देर और दूर तक मदद करने की नहीं है। ऐसे में, क्या भारत चीनी कंपनियों पर लगे प्रतिबंध शिथिल कर नए रास्ते खोलेगा? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पिछली बीजिंग यात्रा के बाद सीमाओं पर बर्फ पिघली थी। इस सिलसिले को आगे बढ़ाना होगा। सप्ताह के मध्य में विदेश मंत्री एस जयशंकर की पेरिस यात्रा और राष्ट्रपति मैक्रों से मुलाकात भी सार्थक संदेश देती है। विश्व राजनीति का नया दस्तूर है- दुश्मन का दुश्मन दोस्त भले न हो, पर साझीदार जरूर बन सकता है।

तेजी से बदलती इस दुनिया में अपना स्थान सुरक्षित रखने के लिए हमें 'री पोजिशनिंग' करनी होगी। नई दिल्ली ऐसा ही कर रही है।

X @shekharkahin

f @shashishekhar.journalist